ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

भारत के आदिवासी समूह

डॉ. सुधांशु वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, आचार्य नरेंद्र देव किसान पीजी कॉलेज, बभनान, गोंडा, उत्तर प्रदेश, भारत

सार

आदिवासी शब्द दो शब्दों 'आदि' और 'वासी' से मिल कर बना है और इसका अर्थ मूल निवासी होता है। भारत की जनसंख्या का 8.6% (10 करोड़ जो 2011 जनगणना के अनुसार हैं (संस्कृत ग्रंथों में)। महात्मा गांधी ने आदिवासियों को गिरिजन (क्योंकि अधिकतर आदिवासी लोग जंगल और पहाड़ों पर रहने वाले लोग हैं, जो जल जंगल जमीन के सच्चे रखवाले हैं) कह कर पुकारा है। भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' पद का उपयोग किया गया है। भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में आंध, गोंड, खरवार, मुण्डा, खड़िया, बोडो, कोल, भील, कोली, सहरिया, संथाल, भूमिज, हो, उरांव, लोहरा, बिरहोर, पारधी, असुर, नायक, भिलाला, मीणा, धानका आदि हैं।

भारत में आदिवासियों को प्रायः 'जनजातीय लोग' के रूप में जाना जाता है। आदिवासी मुख्य रूप से भारतीय राज्यों उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान झारखंड नॉर्थ ईस्ट के 8 राज्य में आदिवासी में बहुसंख्यक व गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक है जबकि भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में यह बहुसंख्यक हैं, जैसे मिजोरम। भारत सरकार ने इन्हें भारत के संविधान की पांचवी अनुसूची में " अनुसूचित जनजातियों " के रूप में मान्यता दी है। अक्सर इन्हें अनुसूचित जातियों के साथ एक ही श्रेणी " अनुसूचित जाति एवं जनजाति " में रखा जाता है।

परिचय

चंदा समिति ने सन् 1960 में अनुसूचति जातियों के अंर्तगत किसी भी जाति को शामिल करने के लिये 5 मानक निर्धारित किया:

1. भौगोलिक एकाकीपन
2. विशिष्ट संस्कृति
3. पिछड़ापन
4. संकुचित स्वभाव
5. आदिम जाति के लक्षण

बहुत से छोटे आदिवासी समूह आधुनिकीकरण के कारण हो रहे पारिस्थितिकी पतन के प्रति काफी संवेदनशील हैं। व्यवसायिक वानिकी और गहन कृषि दोनों ही उन जंगलों के लिए विनाशकारी साबित हुए हैं जो कई शताब्दियों से आदिवासियों के जीवन यापन का स्रोत रहे हैं। आदिवासी समाज की समस्या 1.अशिक्षा 2.अंधविश्वास&पाखण्डवाद 3.बेरोजगारी 4.भुखमरी 5.दहेजप्रथा

आदिवासी भाषाएँ

भारत में सभी आदिवासी समुदायों की अपनी विशिष्ट भाषाएं है। भाषाविज्ञानियों ने भारत के सभी आदिवासी भाषाओं को मुख्यतः तीन भाषा परिवारों में रखा है-गोंडी, द्रविड़, आस्ट्रिक और लेकिन कुछ आदिवासी भाषाएं भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत भी आती हैं। आदिवासी भाषाओं में 'भीली' बोलने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है जबकि दूसरे स्थान पर 'गोंडी' भाषा और तीसरे स्थान पर 'संताली' भाषा है। चौथे स्थान पर कोरकू भाषा है । भारतीय राज्यों में एकमात्र झारखण्ड में ही 5 आदिवासी भाषाओं - संताली, मुण्डारी, हो, कुड़ुख और खड़िया - को 2011 में द्वितीय राज्यभाषा का दर्जा प्रदान किया गया।

भारत की 114 मुख्य भाषाओं में से 22 को ही संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इनमें हाल में शामिल की गयी संताली और बोड़ो ही मात्र आदिवासी भाषाएं हैं। अनुसूची में शामिल संताली (0.62), सिंधी, नेपाली, बोड़ो (सभी 0.25), मिताइ (0.15), डोगरी और संस्कृत भाषाएं एक प्रतिशत से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं। जबकि भीली (0.67), गोंडी

(0.25), टुलु (0.19) और कुड़ख 0.17 प्रतिशत लोगों द्वारा व्यवहार में लाए जाने के बाद भी आठवीं अनुसूची में दर्ज नहीं की गयी हैं। (जनगणना 2001)

आदिवासियों के धार्मिक विश्वास

आदिवासियों का अपना धर्म भी है। ये प्रकृति-पूजक हैं और वन, पर्वत, नदियों एवं सूर्य की आराधना करते हैं। आधुनिक काल में जबरन बाह्य संपर्क में आने के फलस्वरूप इन्होंने हिन्दू, ईसाई एवं इस्लाम धर्म को भी अपनाया है। अंग्रेजी राज के दौरान बड़ी संख्या में ये ईसाई बने तो आजादी के बाद इनके हिंदूकरण का प्रयास तेजी से हुआ है। परन्तु आज ये स्वयं की धार्मिक पहचान के लिए संगठित हो रहे हैं और भारत सरकार से जनगणना में अपने लिए अलग से धार्मिक कोड (सरना कोड या आदिवासी धर्म कोड) की मांग कर रहे हैं।

भारत में 1871 से लेकर 1941 तक हुई जनगणनाओं में आदिवासियों को अन्य धमों से अलग धर्म में गिना गया है, जिसे एबओरिजिन्स, एबोरिजिनल, एनिमिस्ट, ट्राइबल रिलिजन या ट्राइब्स इत्यादि नामों से वर्णित किया गया है। हालांकि 1951 की जनगणना के बाद से आदिवासियों को अलग से गिनना बन्द कर दिया गया है।

भारत में आदिवासियों को दो वर्गों में अधिसूचित किया गया है- अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित आदिम जनजाति।

जीववाद

विश्वदृष्टि है कि जीववाद गैर-मानव संस्थाओं (जानवरों, पौधों, और निर्जीव वस्तुओं या घटनाओं) में एक आध्यात्मिक सार है। धर्म और समाज के विश्वकोश का अनुमान है कि भारत की आबादी का 1-5% जीववाद है। भारत सरकार मानती है कि भारत के स्वदेशी पूर्व-हिंदू जीववाद-आधारित धर्मों की सदस्यता लेते हैं।

कुछ स्वदेशी आदिवासी लोगों की विश्वास प्रणाली के लिए एक शब्द के रूप में धर्म के नृविज्ञान में जीववाद का उपयोग किया जाता है, विशेष रूप से संगठित धर्म के विकास से पहले। हालांकि प्रत्येक संस्कृति की अपनी अलग-अलग पौराणिक कथाएं और अनुष्ठान हैं, "जीववाद" को स्वदेशी लोगों के "आध्यात्मिक" या "अलौकिक" दृष्टिकोण के सबसे आम, मूलभूत सूत्र का वर्णन करने के लिए कहा जाता है। शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण इतना मौलिक, सांसारिक, रोज़मर्रा का और मान लिया गया है कि अधिकांश शत्रुतापूर्ण स्वदेशी लोगों के पास अपनी भाषाओं में एक शब्द भी नहीं है जो "जीववाद" (या "धर्म") से मेल खाता हो; यह शब्द एक मानवशास्त्रीय रचना है।

सरनावाद

सरनावाद या सरना (स्थानीय भाषा: सरना धोरोम, जिसका अर्थ है "पवित्र जंगल का धर्म") मध्य-पूर्व भारत के राज्यों की आदिवासी आबादी, जैसे मुंडा, हो, संथाल, भूमिज, उरांव और अन्य के स्वदेशी धर्मों को परिभाषित करता है। मुंडा, हो, संथाल, भूमिज और उरांव जनजाति ने सरना धर्म का पालन करते हैं, जहां सरना एक पवित्र धार्मिक स्थल है। उनका धर्म पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही जो मौखिक परंपराओं पर आधारित है। इसमें प्रकृति, जंगल, पहाड़ (बुरु), ग्राम देवता, सूर्य और चंद्रमा की पूजा शामिल है।

सरना धर्म के अनुयायी

डोनी - पोलो

डोनी-पोलो पूर्वोत्तर भारत में अरुणाचल प्रदेश से तानी के स्वदेशी धर्मों, एनिमिस्टिक और शैमैनिक प्रकार के लिए दिया गया पदनाम है। "डोनी-पोलो" का अर्थ "सूर्य-चंद्रमा" है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

भारत की प्रमुख जनजातियाँ

भारत में 461 जनजातियां हैं, जिसमें से 424 जनजातियों भारत के सात क्षेत्रों में बंटी हुई हैं:

उत्तरी क्षेत्र
जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड , हिमाचल प्रदेश

जातियाँ: लेपचा, भूटिया, थारू, बुक्सा, जॉन सारी, खाम्पटी, कनोटा।

इन सब में मंगोल जाति के लक्षण मिलते हैं। जैसे:- तिरछी छोटी आंखे (चाइनीज, तिब्बती), पीला रंग, सीधे बाल, चेहरा चौड़ा, चपटा नाक।

उत्तर प्रदेश

तराई जिलों में थारु, बोक्सा, भूटिया, राजी, जौनसारी,केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश के 11 जिलों में गोंड़, धुरिया, ओझा, पठारी, राजगोड़, तथा देवरिया बलिया, वाराणसी, सोनभद्र में खरवार, व ललितपुर में सहरिया,सोनभद्र में बैगा, पनिका,पहडिया, पंखा, अगरिया, पतरी, चेरो भूइया।

बिहार

असुर, अगरिया, बैगा, बनजारा, बैठुडी, बेदिया, खरवार, भूमिज, संथाल आदि।

पूर्वोत्तर क्षेत्र

नागा

नागा, मिजो, गारो, खासी, जयंतिया, आदि, न्याशी, अंगामी, भूटिया, कुकी, रेंगमा, बोडो और देवरी वगैरा जनजाति हैं।

पूर्वी क्षेत्र

- उड़ीसा:- मुण्डा, संथाल, हो, जुआंग, खोड़, भूमिज, खरिया।
- झारखण्ड:- मुण्डा, उराँव, भूमिज, संथाल, बिरहोर, हो।

संथाल:- भारत की सबसे बड़ी जनजाति। संथाली भाषा को संविधान में मान्यता प्राप्त हैं।

- पश्चिम बंगाल:- मुण्डा, हो, भूमिज, उराँव, संथाल, कोड़ा।

पहचान : रंग काला, चॉकलेटी कलर, लंबा सिर, चौड़ी छोटी व चपटी नाक, हल्के घुंघराले बाल। यह सभी प्रोटो ऑस्टेलाइड प्रजाति से संबधित हैं।

मध्य क्षेत्र

गोंड,कोरकू , कोल, परधान, बैगा, मारिया, अबूझमाडिया, धनवार/धनुहार, धुलिया, पहाड़ी कोरवा, बिरहोर, हल्बा,कंवर।

ये सभी प्रजातियां छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, पूर्वी आंध्र-प्रदेश में निवास करते हैं। ये सभी प्रोटो ऑस्टेलाइड प्रजाति से संबधित हैं।

पश्चिमी भारत में

गुजरात की एक आदिवासी महिला

- गुजरात,(राजस्थान में विशेष कर उदयपुर सभांग में भील,भिलाला,मीना ; गरासिया व सिरोही कि आबुरोङ व पिण्डवाङा में भील ,नायक *गरासिया बहुतायत आबूरोङ के भाखर पट्टे में सभी आदिवासी समुदाय रहते हैं पश्चिमी मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र : भील, गोंड़,धाणका भीलाला , बारेला इत्यादि

दक्षिण भारत में

- केरल:- कोटा, बगादा, टोडा। (टोडा में बहुपति प्रथा प्रचलित है।)
- कुरूंबा, कादर, चेंचु, पूलियान, नायक, चेट्टी ये सभी जनजातियां नीग्रिये से संबधित हैं।
- विशेषताएं:- काला/गोरा रंग, बड़े होठ,बड़े नाक long height

द्विपीय क्षेत्र

- अंडमान-निकोबार- जाखा, आन्गे, सेन्टलिस, सेम्पियन (शोम्पेन)

यह जातियां नीग्रिये प्रजाति से संबधित हैं। ये लुप्त होने के कगार पर हैं।

विचार-विमर्श

सामान्यतः "आदिवासी" (Indigenous peoples) शब्द का प्रयोग किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है जिनका उस भौगोलिक क्षेत्र से ज्ञात इतिहास में सबसे पुराना सम्बन्ध रहा हो। परन्तु संसार के विभिन्न भूभागों में जहाँ अलग-अलग धाराओं में अलग-अलग क्षेत्रों से आकर लोग बसे हों उस विशिष्ट भाग के प्राचीनतम अथवा प्राचीन निवासियों के लिए भी इस शब्द का उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ, "इंडियन" अमरीका के आदिवासी कहे जाते हैं और प्राचीन साहित्य में दस्यु,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

निषाद आदि के रूप में जिन विभिन्न प्रजातियों समूहों का उल्लेख किया गया है उनके वंशज समसामयिक भारत में आदिवासी माने जाते हैं। आदिवासी के समानार्थी शब्दों में ऐबोरिजिनल, इंडिजिनस, देशज, मूल निवासी, जनजाति, गिरिजन, बर्बर, आदि प्रचलित हैं। इनमें से हर एक शब्द के पीछे सामाजिक व राजनीतिक संदर्भ हैं।

संस्कृति

अधिकांश आदिवासी संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवनयापन करते हैं। वे सामन्यत: क्षेत्रीय समूहों में रहते हैं और उनकी संस्कृति अनेक दृष्टियों से स्वयंपूर्ण रहती है। इन संस्कृतियों में ऐतिहासिक जिज्ञासा का अभाव रहता है तथा ऊपर की थोड़ी ही पीढ़ियों का यथार्थ इतिहास क्रमश: किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं में घुल मिल जाता है। सीमित परिधि तथा लघु जनसंख्या के कारण इन संस्कृतियों के रूप में स्थिरता रहती है, किसी एक काल में होनेवाले सांस्कृतिक परिवर्तन अपने प्रभाव एवं व्यापकता में अपेक्षाकृत सीमित होते हैं। परंपराकेंद्रित आदिवासी संस्कृतियाँ इसी कारण अपने अनेक पक्षों में रूढ़िवादी सी दीख पड़ती हैं। लेकिन भारत में हिंदू धर्म की संस्कृति इनमें देखी जाती है और वो सनातन के वँशज कहलाते है। उत्तर और दक्षिण अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, एशिया तथा अनेक द्वीपों और द्वीपसमूहों में आज भी आदिवासी संस्कृतियों के अनेक रूप देखे जा सकते हैं।

भारत के आदिवासी

दो आदिवासी लड़कियाँ

भारत में अनुसूचित आदिवासी समूहों की संख्या 700 से अधिक है।भारत में 1871 से लेकर 1941 तक हुई जनगणनाओं में आदिवासियों को अन्य धमों से अलग धर्म में गिना गया है, जैसे Other religion-1871, ऐबरिजनल 1881, फारेस्ट ट्राइब-1891, एनिमिस्ट-1901, एनिमिस्ट-1911, प्रिमिटिव-1921, ट्राइबल रिलिजन -1931,"ट्राइब-1941" इत्यादि नामों से वर्णित किया गया है। हालांकि 1951 की जनगणना के बाद से आदिवासियों को हिन्दू धर्म में गिनना शुरू कर दिया गया है।

भारत में आदिवासियों को हिंदू धर्म के दो वर्गों में अधिसूचित किया गया है- अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित आदिम जनजाति। हिंदू विवाह अधिनियम, हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 2 (2) के अनुसार अनुसूचित जनजाति के सदस्यों पर लागू नहीं है। यदि ऐसा है, तो हिंदू मैरिज एक्ट की धारा 9 के तहत फैमिली कोर्ट द्वारा जारी किया गया निर्देश अपीलकर्ता पर लागू नहीं होता है। " आदिवासी लोग हिन्दू धर्म का पालन करते हैं,और सारे त्यौहार मनाते है। इन पर मुसलमानों ने सदैव जुल्म किये जब भारत मुसलमान और अंग्रेजों का गुलाम था। उनकी प्रथागत जनजातीय आस्था के अनुसार विवाह और उत्तराधिकार से जुड़े मामलों में सभी विशेषाधिकारों को बनाए रखने के लिए उनके जीवन का अपना तरीका भी है।

भारत की जनगणना 1951 के अनुसार आदिवासियों की संख्या 9,91,11,498 थी जो 2001 की जनगणना के अनुसार 12,43,26,240 हो गई। यह देश की जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है।

प्रजातीय दृष्टि से इन समूहों में नीग्रिटो, प्रोटो-आस्ट्रेलायड और मंगोलायड तत्त्व मुख्यत: पाए जाते हैं, यद्यपि कतिपय नृतत्ववेत्ताओं ने नीग्रिटो तत्त्व के संबंध में शंकाएँ उपस्थित की हैं। भाषाशास्त्र की दृष्टि से उन्हें आस्ट्रो-एशियाई, द्रविड़ और तिब्बती-चीनी-परिवारों की भाषाएँ बोलनेवाले समूहों में विभाजित किया जा सकता है। भौगोलिक दृष्टि से आदिवासी भारत का विभाजन चार प्रमुख क्षेत्रों में किया जा सकता है : उत्तरपूर्वीय क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र और दक्षिणी क्षेत्र।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

आदिवासी निवास क्षेत्र

उत्तर पूर्वीय क्षेत्र के अंतर्गत हिमालय अंचल के अतिरिक्त तिस्ता उपत्यका और ब्रह्मपुत्र की यमुना-पद्मा-शाखा के पूर्वी भाग का पहाड़ी प्रदेश आता है। इस भाग के आदिवासी समूहों में गुरूंग, लिंबू, लेपचा, आका, डाफला, अबोर, मिरी, मिशमी, सिंगपी, मिकिर, राम, कवारी, गारो, खासी, नाग, कुकी, लुशाई, चकमा आदि उल्लेखनीय हैं।

मध्यक्षेत्र का विस्तार उत्तर-प्रदेश के मिर्जापुर जिले के दक्षिणी ओर राजमहल पर्वतमाला के पश्चिमी भाग से लेकर दक्षिण की गोदावरी नदी तक है। संथाल, मुंडा, माहली, उरांव, हो, भूमिज, खड़िया, बिरहोर, जुआंग, खोंड, सवरा, गोंड, भील, बैगा, कोरकू, कमार आदि इस भाग के प्रमुख आदिवासी हैं।

पश्चिमी क्षेत्र में भील, मीणा, ठाकूर, कटकरी, टोकरे कोली, कोली महादेव, मन्नेवार, गोंड, कोलाम, हलबा, पावरा (महाराष्ट्र) आदि प्रमुख आदिवासी जनजातियां निवास करते हैं। मध्य पश्चिम राजस्थान से होकर दक्षिण में सह्याद्रि तक का पश्चिमी प्रदेश इस क्षेत्र में आता है। गोदावरी के दक्षिण से कन्याकुमारी तक दक्षिणी क्षेत्र का विस्तार है। इस भाग में जो आदिवासी समूह रहते हैं उनमें चेंचू, कोंडा, रेड्डी, राजगोंड, कोया, कोलाम, कोटा, कुरूंबा, बडागा, टोडा, काडर, मलायन, मुशुवन, उराली, कनिक्कर आदि उल्लेखनीय हैं।

नृतत्ववेत्ताओं ने इन समूहों में से अनेक का विशद शारीरिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन किया है। इस अध्ययन के आधार पर भौतिक संस्कृति तथा जीवनयापन के साधन सामाजिक संगठन, धर्म, बाह्य संस्कृति, प्रभाव आदि की दृष्टि से आदिवासी भारत के विभिन्न वर्गीकरण करने के अनेक वैज्ञानिक प्रयत्न किए गए हैं। इस परिचयात्मक रूपरेखा में इन सब प्रयत्नों का उल्लेख तक संभव नहीं है। आदिवासी संस्कृतियों की जटिल विभिन्नताओं का वर्णन करने के लिए भी यहाँ पर्याप्त स्थान नहीं है। राठवा,भिल,तडवी,गरासिया,वसावा,बावचा,चौधरी, दुंगरा भील,पटेलिया ये सब आदिवासी (गुजरात) में रहते हैं। ओर वे प्रकृति की पूजा करते हैं। गुजरात के सोनगढ़ व्यरा, बारडोली सूरत,राजपिपला, छोटा उदेपुर,दाहोद, डांग ये जिलों में आदिवासी पाए जाते हैं।

आदिवासी परंपरा

प्राचीनकाल में आदिवासियों ने भारतीय परंपरा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया था और उनके रीति रिवाज और विश्वास आज भी हिंदू समाज में देखे जा सकते हैं, तथापि यह निश्चित है कि वे बहुत पहले ही भारतीय समाज और संस्कृति के विकास की प्रमुख धारा में मिल गए थे। आदिवासी समूह हिंदू समाज के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों में समान है,कुछ समूहों में कई महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। समसामयिक आर्थिक शक्तियों तथा सामाजिक प्रभावों के कारण भारतीय समाज के इन विभिन्न अंगों की दूरी अब कम हो चुकि है।

आदिवासियों की सांस्कृतिक भिन्नता को बनाए रखने में कई प्रयत्नों का योग रहा है। मनोवैज्ञानिक धरातल पर उनमें से अनेक में प्रबल "जनजाति-भावना" (ट्राइबल फीलिंग) है। सामाजिक-सांस्कृतिक-धरातल पर उनकी संस्कृतियों के गठन में केंद्रीय महत्त्व है। असम के नागा आदिवासियों की नरमुंडप्राप्ति प्रथा बस्तर के मुरियों की घोटुल संस्था, टोडा समूह में बहुपतित्व आदि का उन समूहों की संस्कृति में बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। परंतु ये संस्थाएँ और प्रथाएँ भारतीय समाज की प्रमुख प्रवृत्तियों के अनुकूल नहीं हैं। आदिवासियों की संकलन-आखेटक-अर्थव्यवस्था तथा उससे कुछ अधिक विकसित अस्थिर और स्थिर कृषि की अर्थव्यवस्थाएँ अभी भी परंपरास्वीकृत प्रणाली द्वारा लाई जाती हैं। परंपरा का प्रभाव उनपर नए आर्थिक मूल्यों के प्रभाव की अपेक्षा अधिक है। धर्म के क्षेत्र में जीववाद, जीविवाद, पितृपूजा आदि हिंदू धर्म के और समीप लाते है।

आज के आदिवासी भारत में हिन्दू-संस्कृति-प्रभावों की दृष्टि से आदिवासियों के चार-धाम मुख्य धार्मिक स्थलों में से एक है।हिन्दू-संस्कृतियों का स्वीकरण इस मात्रा में कर लिया है कि अब वे केवल नाममात्र के लिए आदिवासी रह गए है।

परिणाम

धर्म

आदिवासी समुदायों की धार्मिक प्रथाएं ज्यादातर हिंदू धर्म के विभिन्न रंगों से मिलती जुलती हैं। 1871 से 1941 तक की भारत की जनगणना में आदिवासियों को अन्य धर्मों से भिन्न धर्मों में गिना गया है, 1891 (वन जनजाति), 1901 (एनिमिस्ट), 1911

(आदिवासी एनिमिस्ट), 1921 (पहाड़ी एवं वन जनजाति), 1931 (आदिम जनजाति)), 1941 (जनजाति), हालाँकि, 1951 की जनगणना के बाद से, आदिवासी आबादी अलग से दर्ज की गई है। ब्रिटिश काल के दौरान और आजादी के बाद कई आदिवासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया है। पिछले दो दशकों के दौरान मिशनरियों की बढ़ती उपस्थिति के परिणामस्वरूप ओडिशा , मध्य प्रदेश, झारखंड के आदिवासी प्रोटेस्टेंट समूहों में परिवर्तित हो गए हैं।

इरुला पुरुष और महिला.

आदिवासी मान्यताएँ जनजाति के अनुसार अलग-अलग होती हैं, और आमतौर पर ऐतिहासिक वैदिक धर्म से अलग होती हैं , इसके अद्वैतवादी आधार, इंडो-यूरोपीय देवता (जो अक्सर प्राचीन ईरानी, ग्रीक और रोमन देवताओं के सजातीय होते हैं, उदाहरण के लिए मित्र / मिथरा / मिथ्रा), मूर्ति की कमी पूजा और पुनर्जन्म की अवधारणा का अभाव । [81]

जीववाद

जीववाद (लैटिन एनिमस से , -आई " आत्मा , जीवन ") विश्वदृष्टि है कि गैर-मानवीय संस्थाओं (जानवरों, पौधों और निर्जीव वस्तुओं या घटनाओं) में आध्यात्मिक सार होता है। धर्म और समाज के विश्वकोश का अनुमान है कि भारत की 1-5% आबादी जीववादी है। [82] भारत सरकार मानती है कि भारत के मूल निवासी पूर्व-हिंदू एनिमिस्ट-आधारित धर्मों की सदस्यता लेते हैं। [83] [84]

जीववाद का उपयोग धर्म के मानवविज्ञान में कुछ स्वदेशी जनजातीय लोगों की विश्वास प्रणाली के लिए एक शब्द के रूप में किया जाता है , [85] विशेष रूप से संगठित धर्म के विकास से पहले। [86] हालांकि प्रत्येक संस्कृति की अपनी अलग-अलग पौराणिक कथाएं और रीति-रिवाज हैं, कहा जाता है कि "जीववाद" स्वदेशी लोगों के "आध्यात्मिक" या "अलौकिक" दृष्टिकोण के सबसे आम, मूलभूत सूत्र का वर्णन करता है। एनिमिस्टिक परिप्रेक्ष्य इतना मौलिक, सांसारिक, रोजमर्रा का और सर्वमान्य है कि अधिकांश एनिमिस्टिक स्वदेशी लोगों के पास अपनी भाषाओं में एक शब्द भी नहीं है जो "एनिमिज्म" (या यहां तक कि "धर्म") से मेल खाता हो; [87] यह शब्द एक मानवशास्त्रीय रचना हैन कि स्वयं लोगों द्वारा नामित।

डोनयी-पोलो

डोनयी-पोलो , पूर्वोत्तर भारत में अरुणाचल प्रदेश के तानी के , एनिमिस्टिक और शैमैनिक प्रकार के स्वदेशी धर्मों को दिया गया पदनाम है । [88] [89] "डोनी-पोलो" नाम का अर्थ "सूर्य-चंद्रमा" है। [90]

सरनावाद

सरनावाद या सरना [91] [92] [93] (स्थानीय भाषाएं: सरना धोरोम , जिसका अर्थ है "पवित्र जंगलों का धर्म") मध्य-पूर्व भारत के राज्यों की आदिवासी आबादी , जैसे मुंडा , के स्वदेशी धर्मों को परिभाषित करता है । हो , संताली , खुरुक और अन्य । मुंडा, हो, संथाल और ओरांव जनजाति सरना धर्म का पालन करते थे, [94] जहां सरना का अर्थ पवित्र उपवन है। उनका धर्म पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही मौखिक परंपराओं पर आधारित है। इसमें ग्राम देवता, सूर्य और चंद्रमा की पूजा शामिल है।

अन्य आदिवासी एनिमिस्ट

दक्षिण भारत की नीलगिरि पहाड़ियों के एनिमिस्ट शिकारी संग्रहकर्ता नायक लोग । [95]

जीववाद निकोबारी लोगों का पारंपरिक धर्म है ; उनके धर्म को आत्मा पूजा, जादू-टोना और पशु बलि के प्रभुत्व और परस्पर क्रिया द्वारा चिह्नित किया गया है। [96]

हिंदू धर्म

आधुनिक हिंदू धर्म की आदिवासी जड़ें

कुछ इतिहासकारों और मानवविज्ञानियों का दावा है कि कई हिंदू प्रथाओं को आदिवासी संस्कृति से अपनाया गया होगा। [97] [98] [99] इसमें कुछ जानवरों जैसे बंदर , गाय, मछली (मत्स्य), मोर , कोबरा (नाग) और हाथियों और पौधों जैसे पवित्र अंजीर (पीपल), ओसीमम टेनुइफ्लोरम की पवित्र स्थिति भी शामिल है। (तुलसी) और अज़ादिराक्टा इंडिका (नीम), जो कभी कुछ आदिवासी जनजातियों के लिए टोटेमिक महत्व रखते थे। [98]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

आदिवासी संत

संत एक भारतीय पवित्र व्यक्ति है, और एक भक्त या तपस्वी की उपाधि है, विशेष रूप से उत्तर और पूर्वी भारत में। आम तौर पर, एक पवित्र या संत व्यक्ति को महात्मा, परमहंस, या स्वामी के रूप में संदर्भित किया जाता है, या उनके नाम के पहले श्री या श्रील उपसर्ग लगाया जाता है। अंग्रेजी में इस शब्द को कभी-कभी " हिंदू संत " के रूप में गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, हालांकि "संत" का "संत" से कोई संबंध नहीं है।

- संत बुद्धू भगत ने मुस्लिम शासकों द्वारा मुंडाओं पर लगाए गए कर के खिलाफ कोल विद्रोह (1831-1832) का नेतृत्व किया था।
- संत धीरा या कन्नप्पा नयनार , [100] 63 नयनार शैव संतों में से एक, एक शिकारी जिसका भोजन प्रसाद भगवान शिव ने सहर्ष स्वीकार किया था। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने अपने मुख से शिवलिंग पर जल डाला और भगवान को सूअर का मांस अर्पित किया। [101]
- संत धुधलीनाथ, गुजराती, 17वीं या 18वीं सदी के भक्त (पृ. 4, भारत के ऐतिहासिक लोगों की कहानी-द कोलिस)
- संत गंगा नारायण सिंह ने ईसाई मिशनरियों और ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ भूमिज विद्रोह (1832-1833) का नेतृत्व किया ।
- संत गुरुदेव कालीचरण ब्रह्मा या गुरु ब्रह्मा, एक बोडो थे जिन्होंने ईसाई मिशनरियों और उपनिवेशवादियों के खिलाफ ब्रह्मा धर्म की स्थापना की थी। ब्रह्म धर्म आंदोलन ने सभी धर्मों के लोगों को एक साथ ईश्वर की पूजा करने के लिए एकजुट करने का प्रयास किया और आज भी जीवित है।
- संत कालू देव, पंजाब, मछुआरा समुदाय निशाधा से संबंधित हैं
- संत कुबेर, जातीय गुजराती, ने 35 वर्षों से अधिक समय तक पढ़ाया और उनके समय में उनके 20,000 अनुयायी थे। [102]
- संत जात्रा उराँव, उराँव ने ईसाई मिशनरियों और ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के खिलाफ ताना भगत आंदोलन (1914-1919) का नेतृत्व किया।
- संत टंट्या मामा (भील), एक भील जिनके नाम पर एक आंदोलन का नाम रखा गया है - "जननायक टंट्या भील"
- संत तिरुमंगई अलवर , कल्लार ने सुंदर तमिल छंद में छह वेदांगों की रचना की [103]
- संत कालेन गुरु (कालेन मुर्मू) संताल जनजाति समुदाय के सबसे प्रिय व्यक्ति हैं, जो अपने पूर्वजों के संदर्भ में चौदहवीं शताब्दी में प्रारंभिक इतिहास के व्यापक रूप से लोकप्रिय 'नागम गुरु' गुरु थे।

ऋषियों

- भक्त शबरी , एक निषाद महिला थी जिसने श्री राम और श्री लक्ष्मण को अपना आधा खाया हुआ बेर फल दिया था, जिसे उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जब वे जंगल में श्री सीता देवी की खोज कर रहे थे।

महर्षियों

- महर्षि मतंग, मतंग भील, भक्त शबरी के गुरु। वास्तव में, वराह पुराण 1.139.91 जैसे अनुच्छेदों में चांडालों को अक्सर 'मातंगा' के रूप में संबोधित किया जाता है।

अवतार

- बिरसा भगवान या बिरसा मुंडा , खसरा कोरा के अवतार माने जाते हैं। लोग उन्हें सिंगबोंगा, सूर्य देवता के रूप में देखते थे। उनके संप्रदाय में ईसाई धर्मान्तरित लोग शामिल थे। [104] वह और उनका वंश, मुंडा , वैष्णव परंपराओं से जुड़े थे क्योंकि वे श्री चैतन्य से प्रभावित थे । [105] बिरसा पनरे बंधुओं वैष्णवों के बहुत करीब थे।
- किरात - एक शिकारी के रूप में भगवान शिव का रूप। इसका उल्लेख महाभारत में मिलता है । कर्पिलिक्कावु श्री महादेव मंदिर, केरल में भगवान शिव के इस अवतार की पूजा की जाती है और यह भारत के सबसे पुराने जीवित मंदिरों में से एक माना जाता है।
- वेट्टक्कोरुमकन, भगवान किरात के पुत्र।

- कालदूतका या 'वैकुंठनाथ', कल्लार (डाकू), भगवान विष्णु का अवतार। [106]

अन्य आदिवासी और हिंदू धर्म

कुछ हिंदू यह नहीं मानते कि भारतीय आदिवासी वैदिक लोगों की प्राचीन सिल्वन संस्कृति [107] माधव सदाशिव गोलवलकर ने कहा:

आदिवासियों को " यज्ञोपवीत दिया जा सकता है (...) उन्हें धार्मिक अधिकारों के मामले में, मंदिर पूजा में, वेदों के अध्ययन में और सामान्य तौर पर, हमारे सभी सामाजिक और धार्मिक मामलों में समान अधिकार और आधार दिए जाने चाहिए। यह हमारे हिंदू समाज में आजकल पाई जाने वाली जातिवाद की सभी समस्याओं का एकमात्र सही समाधान है।" [108]

भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर में , ब्राह्मण और बादु (आदिवासी) पुजारी हैं। बादुओं का मंदिर के देवता के साथ सबसे घनिष्ठ संपर्क होता है, और केवल वे ही इसे स्नान और श्रृंगार कर सकते हैं। [109] [110]

भीलों का उल्लेख महाभारत में मिलता है । भील बालक एकलव्य के गुरु द्रोण थे और उन्हें इंद्रप्रस्थ में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में आमंत्रित होने का सम्मान मिला था । [111] रामायण और अर्थशास्त्र में भारतीय आदिवासी भी शाही सेनाओं का हिस्सा थे । [112]

शबरी एक भील महिला थी जिसने राम और लक्ष्मण को तब बेर दिए थे जब वे जंगल में सीता की खोज कर रहे थे। मतंग, एक भील, ब्राह्मण बन गया। [113]

ब्राह्मणीकरण और राजपूतीकरण

भांग्या भुक्या कहते हैं कि ब्रिटिश राज के अंतिम वर्षों के दौरान , जबकि शिक्षा ने मध्य भारत के पहाड़ी इलाकों में पश्चिमीकरण की शुरुआत की, इन क्षेत्रों में समानांतर रूप से मनुवादी हिंदूकरण और राजपूतीकरण प्रक्रियाएं भी हुईं। गोंड लोगों और उनके सरदारों ने "जाति-हिंदू प्रथाओं" को अपनाना शुरू कर दिया और अक्सर " राजपूत , और इस प्रकार क्षत्रिय " होने का दावा कियास्थिति"। ब्रिटिश सरकार इन दावों का समर्थन करती थी क्योंकि वे आदिवासी समाज को जाति समाज की तुलना में कम सभ्य मानते थे और मानते थे कि आदिवासी लोगों का जातियों के साथ जुड़ाव आदिवासियों को "अधिक सभ्य और शांत" और "उनके लिए आसान" बना देगा। औपनिवेशिक राज्य का नियंत्रण"। भुक्या यह भी बताते हैं कि मध्य भारत के "राज गोंड परिवारों" ने भारत में ब्रिटिश राज से पहले ही राजपूतों की धार्मिक और सामाजिक परंपराओं को अपना लिया था, और कई गोंड और राजपूतों के बीच "वैवाहिक संबंध" थे राजा। हालाँकि, ब्रिटिश सरकार की " जमींदारी अधिकार, ग्राम प्रधान पद और पटेल पद " की पेशकश की नीतियों ने इस प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। [114]

पतित पावन मिश्र के अनुसार, "आदिवासी शासकों और उनके परिवेश के 'क्षत्रियकरण' के परिणामस्वरूप आदिवासी क्षेत्रों का हिंदूकरण हुआ"। [115]

अलग धार्मिक कोड की मांग

कुछ आदिवासी संगठनों ने मांग की है कि भारत की 2011 की जनगणना में आदिवासियों के लिए एक अलग धार्मिक कोड सूचीबद्ध किया जाए। अखिल भारतीय आदिवासी सम्मेलन 1 और 2 जनवरी 2011 को बर्नपुर, आसनसोल, पश्चिम बंगाल में आयोजित किया गया था। भारत के सभी हिस्सों से 750 प्रतिनिधि उपस्थित थे और उन्होंने धर्म कोड के लिए अपना वोट इस प्रकार डाला: साड़ी धोरोम - 632, सरना - 51, खेरवालिज़म - 14 और अन्य धर्म - 03। भारत की जनगणना । [116]

शिक्षा

भारत में जनजातीय समुदाय शैक्षिक रूप से सबसे कम विकसित हैं। पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यह स्कूलों में आदिवासी छात्रों के खराब प्रदर्शन का एक कारण रहा है। [117] आजादी के बाद से खराब साक्षरता दर के परिणामस्वरूप शिक्षा और उच्च शिक्षा में आदिवासियों की अनुपस्थिति हुई है। एसटी के लिए साक्षरता दर 1961 में 8.5% (पुरुष - 13.8%, महिला - 3.2%) से बढ़कर 1991 में 29.6% (पुरुष - 40.6%, महिला - 18.2%) और 40% (पुरुष - 59%) हो गई है। 1999-2000 में महिला - 37%)। [117] मिजोरम, नागालैंड और मेघालय जैसे एसटी की बड़ी संख्या वाले राज्यों में साक्षरता दर उच्च है, जबकि मध्य

प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान और आंध्र प्रदेश जैसे बड़ी संख्या में आदिवासियों वाले राज्यों में आदिवासी साक्षरता दर कम है।[118] आदिवासी छात्रों की स्कूली शिक्षा के दौरान पढ़ाई छोड़ने की दर बहुत अधिक है। [119]

वे कहते हैं, आदिवासी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था का विस्तार करना और ज़रूरतमंद लोगों के लिए खेतों में काम करने के लिए स्थान आरक्षित करना। दूसरी ओर, पूर्वोत्तर के उन हिस्सों में जहां जनजातियों को आम तौर पर बाहरी लोगों के थोक हमले से बचाया गया है, स्कूली शिक्षा ने जनजातीय लोगों को राजनीतिक और आर्थिक लाभ सुरक्षित करने में मदद की है। वहां की शिक्षा प्रणाली ने व्यवसायों और उच्च-रैंकिंग प्रशासनिक पदों पर उच्च प्रशिक्षित आदिवासी सदस्यों का एक समूह प्रदान किया है। मिडिल और हाई स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में आदिवासी बच्चे सरकारी नीति के केंद्र में हैं, लेकिन जनजाति की शैक्षिक स्थिति में सुधार के प्रयासों के मिश्रित परिणाम आए हैं। योग्य शिक्षकों की भर्ती और शिक्षा की उपयुक्त भाषा का निर्धारण भी परेशानी भरा रहता है। "भाषा प्रश्न" पर एक के बाद एक आयोग ने, कम से कम प्राथमिक स्तर पर, छात्रों की मूल भाषा में निर्देश देने का आह्वान किया है। कुछ क्षेत्रों में, स्कूल में प्रवेश करने वाले आदिवासी बच्चों को आधिकारिक क्षेत्रीय भाषा सीखने से शुरुआत करनी चाहिए, जो अक्सर उनकी आदिवासी भाषा से पूरी तरह से असंबंधित होती है।

कई आदिवासी स्कूल उच्च ड्रॉप-आउट दर से त्रस्त हैं। बच्चे पहले तीन से चार वर्षों तक प्राथमिक विद्यालय में पढ़ते हैं और कुछ ज्ञान प्राप्त करते हैं, लेकिन बाद में निरक्षरता की ओर चले जाते हैं। जो कुछ प्रवेश लेते हैं वे दसवीं कक्षा तक जारी रहते हैं; जो लोग ऐसा करते हैं, उनमें से कुछ ही हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी कर पाते हैं। इसलिए, बहुत कम लोग उच्च शिक्षा संस्थानों में भाग लेने के पात्र हैं, जहां नौकरी छोड़ने की उच्च दर जारी है। गोंड जैसी कृषक जनजातियों के सदस्य अक्सर अपने बच्चों को स्कूल भेजने में अनिच्छुक होते हैं,

आदिवासी भाषाओं और संस्कृति को पढ़ाने और संरक्षित करने के लिए एक अकादमी की स्थापना 1999 में भाषा अनुसंधान और प्रकाशन केंद्र द्वारा की गई थी। आदिवासी अकादमी गुजरात के तेजगढ़ में स्थित है।

अर्थव्यवस्था

अधिकांश जनजातियाँ भारी वन क्षेत्रों में केंद्रित हैं जो सीमित राजनीतिक या आर्थिक महत्व के साथ दुर्गमता को जोड़ती हैं। ऐतिहासिक रूप से, अधिकांश जनजातियों की अर्थव्यवस्था निर्वाह कृषि या शिकार और संग्रहण थी। जनजातीय सदस्य अपनी कुछ आवश्यक वस्तुओं, जैसे नमक और लोहा , के लिए बाहरी लोगों के साथ व्यापार करते थे । कुछ स्थानीय हिंदू कारीगर खाना पकाने के बर्तन जैसी वस्तुएँ प्रदान कर सकते हैं।

हालाँकि, 20वीं सदी की शुरुआत में, बेहतर परिवहन और संचार के कारण बड़े क्षेत्र गैर-आदिवासियों के हाथों में चले गए। 1900 के आसपास, ब्रिटिश सरकार द्वारा कई क्षेत्रों को एक योजना के माध्यम से बसने के लिए खोल दिया गया था, जिसके तहत अंदर आने वाले प्रवासियों को खेती के बदले में मुफ्त भूमि का स्वामित्व प्राप्त होता था। हालाँकि, जनजातीय लोगों के लिए, भूमि को अक्सर एक सामान्य संसाधन के रूप में देखा जाता था, जिसे इसकी आवश्यकता होती थी, उसके लिए यह मुफ़्त थी। जब तक आदिवासियों ने औपचारिक भूमि स्वामित्व प्राप्त करने की आवश्यकता को स्वीकार किया, तब तक वे उन जमीनों पर दावा करने का अवसर खो चुके थे जो शायद उनकी मानी जाती थीं। औपनिवेशिक और स्वतंत्रता के बाद के शासन ने आदिवासियों को बाहरी लोगों के शिकार से बचाने की आवश्यकता को देर से महसूस किया और आदिवासी भूमि की बिक्री पर रोक लगा दी। हालाँकि भूमि पट्टों के रूप में एक महत्वपूर्ण खामी को खुला छोड़ दिया गया था,

1970 के दशक में, आदिवासी लोग फिर से तीव्र भूमि दबाव में आ गए, खासकर मध्य भारत में। जनजातीय भूमि पर प्रवासन में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई, क्योंकि जनजातीय लोगों ने कई तरीकों से अपनी भूमि का स्वामित्व खो दिया - पट्टा, ऋण से जब्ती, या भूमि रजिस्ट्री अधिकारियों की रिश्वतखोरी। अन्य गैर-आदिवासियों ने बस सरकार पर कब्ज़ा कर लिया या यहाँ तक कि उन्हें आदिवासी के रूप में वर्गीकृत करने के लिए सरकारों से पैरवी भी की ताकि वे पूर्व में स्थापित जनजातियों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकें। किसी भी मामले में, 1960 और 1970 के दशक में कई आदिवासी सदस्य भूमिहीन मजदूर बन गए, और जो क्षेत्र कुछ साल पहले जनजातियों के विशेष क्षेत्र थे, उनमें आदिवासियों और गैर-आदिवासियों की बढ़ती मिश्रित आबादी थी। गैर-आदिवासी सदस्यों को अवैध कब्जे से बेदखल करने के सरकारी प्रयास धीरे-धीरे आगे बढ़े हैं; जब निष्कासन होता है, तो बाहर निकाले गए लोग आमतौर पर गरीब, निचली जातियों के सदस्य होते हैं।

बेहतर संचार, मोटर चालित यातायात वाली सड़कें, और अधिक लगातार सरकारी हस्तक्षेप जनजातीय लोगों के बाहरी लोगों के साथ बढ़ते संपर्क में शामिल थे। वाणिज्यिक राजमार्ग और नकदी फसलें अक्सर गैर-आदिवासी लोगों को दूरदराज के इलाकों में

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

खींचती हैं। 1960 और 1970 के दशक तक, निवासी गैर-आदिवासी दुकानदार कई आदिवासी गांवों की एक स्थायी विशेषता थे। चूंकि दुकानदार अक्सर उधार पर सामान बेचते हैं (उच्च ब्याज की मांग करते हुए), कई आदिवासी सदस्य गहरे कर्ज में डूब गए हैं या अपनी जमीन गिरवी रख दी है। व्यापारी आदिवासियों को नकदी फसलें (जैसे कपास या अरंडी का तेल) उगाने के लिए भी प्रोत्साहित करते हैंपौधे), जो आवश्यकताओं के लिए बाजार पर जनजातीय निर्भरता को बढ़ाता है। ऋणग्रस्तता इतनी व्यापक है कि यद्यपि ऐसे लेन-देन अवैध हैं, व्यापारी कभी-कभी अपने देनदारों को गिरमिटिया चपरासी की तरह अन्य व्यापारियों को 'बेच' देते हैं ।

कुछ जनजातियों के लिए अंतिम झटका तब आया जब गैर-आदिवासी, राजनीतिक जोड़-तोड़ के माध्यम से, कानूनी आदिवासी दर्जा हासिल करने में कामयाब रहे, यानी अनुसूचित जनजाति के रूप में सूचीबद्ध होने में।

हिमालय की तलहटी में जनजातियाँ गैर-आदिवासियों की घुसपैठ से उतनी कठोर नहीं हुई हैं। ऐतिहासिक रूप से, उनकी राजनीतिक स्थिति हमेशा शेष भारत से अलग थी। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल तक, प्रायद्वीपीय भारत में केन्द्रित किसी भी साम्राज्य का बहुत कम प्रभावी नियंत्रण था; यह क्षेत्र स्वायत्त शत्रु जनजातियों द्वारा आबाद था। संवेदनशील पूर्वोत्तर सीमा की रक्षा के प्रयासों में, अंग्रेजों ने "इनर लाइन" नामक नीति का पालन किया; गैर-आदिवासी लोगों को केवल विशेष अनुमति के साथ ही क्षेत्रों में जाने की अनुमति थी। उपनिवेशवाद के बाद की सरकारों ने चीन के साथ सीमा को सुरक्षित करने की रणनीति के हिस्से के रूप में हिमालयी जनजातियों की रक्षा करने की नीति जारी रखी है ।

पारिस्थितिक खतरे

कई छोटे जनजातीय समूह आधुनिकीकरण के कारण होने वाले पारिस्थितिक क्षरण के प्रति काफी संवेदनशील हैं। वाणिज्यिक वानिकी और गहन कृषि दोनों ही उन वनों के लिए विनाशकारी साबित हुए हैं जो कई सदियों से कृषि में गिरावट का सामना कर रहे थे। [120] भारत के मध्य भाग में आदिवासी नक्सली विद्रोह के खिलाफ सरकार के सलवा जुडूम अभियान के शिकार हुए हैं। [121] [122] [123]

वन भंडार पर सरकारी नीतियों ने जनजातीय लोगों को गहराई से प्रभावित किया है। वनों को आरक्षित करने के सरकारी प्रयासों ने इसमें शामिल आदिवासी लोगों की ओर से सशस्त्र (यदि निरर्थक) प्रतिरोध तेज कर दिया है। वनों के गहन दोहन का अर्थ अक्सर बाहरी लोगों को पेड़ों के बड़े क्षेत्रों को काटने की अनुमति देना होता है (जबकि मूल आदिवासी निवासियों को काटने से प्रतिबंधित किया गया था), और अंततः आदिवासी जीवन को बनाए रखने में सक्षम मिश्रित वनों को एकल-उत्पाद वृक्षारोपण से प्रतिस्थापित करना होता है। आरक्षित वन भूमि का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने के लिए गैर-आदिवासियों ने अक्सर स्थानीय अधिकारियों को रिश्वत दी है।

इस प्रकार उत्तरी जनजातियों को उस प्रकार के शोषण से आश्रय मिला है जो दक्षिण एशिया में अन्यत्र जनजातियों को झेलना पड़ा है। उदाहरण के लिए, अरुणाचल प्रदेश (पूर्व में नॉर्थ-ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी का हिस्सा) में , आदिवासी सदस्य वाणिज्य और अधिकांश निचले स्तर के प्रशासनिक पदों पर नियंत्रण रखते हैं। क्षेत्र में सरकारी निर्माण परियोजनाओं ने जनजातियों को नकदी का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान किया है। कुछ जनजातियों ने शिक्षा प्रणाली के माध्यम से तेजी से प्रगति की है (इस संबंध में प्रारंभिक मिशनरियों की भूमिका महत्वपूर्ण थी)। निर्देश असमिया में शुरू किया गया था लेकिन अंततः इसे हिंदी में बदल दिया गया; 1980 के दशक की शुरुआत तक, अधिकांश स्तरों पर अंग्रेजी पढ़ाई जाने लगी। इस प्रकार पूर्वोत्तर जनजातीय लोगों ने कुछ हद तक सामाजिक गतिशीलता का आनंद लिया है।

कई आदिवासियों के निरंतर आर्थिक अलगाव और शोषण को भारतीय प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह द्वारा 2009 में सभी 29 भारतीय राज्यों के मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में "व्यवस्थित विफलता" के रूप में उजागर किया गया था , जहां उन्होंने इसे नक्सली अशांति का एक प्रमुख कारण भी बताया था। इससे रेड कॉरिडोर जैसे क्षेत्र प्रभावित हुए हैं । [124] [125] [126] [127] [128]

जनजातीय वर्गीकरण मानदंड और मांगें

स्कारिफिकेशन , महान अंडमानी जनजातीय पहचान का एक पारंपरिक प्रतीक (1901 फोटो)

किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति के रूप में निर्दिष्ट करने के लिए वर्तमान में अपनाए जाने वाले मानदंड हैं: (i) आदिम लक्षणों के संकेत, (ii) विशिष्ट संस्कृति, (iii) भौगोलिक अलगाव, (iv) बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ संपर्क में शर्म, और (v)) पिछड़ापन.

जनसंख्या जटिलताएँ, और भारत में जातीयता और भाषा से जुड़े विवाद, कभी-कभी आदिवासी के रूप में समूहों की आधिकारिक मान्यता (अनुसूचित जनजाति सूची में शामिल करने के माध्यम से) को राजनीतिक और विवादास्पद बना देते हैं। हालाँकि, उनकी भाषा परिवार संबद्धता के बावजूद, ऑस्ट्रलॉइड और नेग्रिटो समूह जो भारत में विशिष्ट वन, पर्वत या द्वीप-निवास जनजातियों के रूप में बचे हुए हैं और जिन्हें अक्सर आदिवासी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। [129] पूर्वोत्तर भारत के अपेक्षाकृत स्वायत्त आदिवासी समूह (खासी, अपातानी और नागा सहित), जो ज्यादातर ऑस्ट्रो-एशियाटिक या तिब्बती-बर्मन भाषी हैं, उन्हें भी आदिवासी माना जाता है: इस क्षेत्र में भारत का 7.5% भूमि क्षेत्र शामिल है लेकिन 20 इसकी जनजातीय आबादी का %. [130]हालाँकि, सभी स्वायत्त पूर्वोत्तर समूहों को आदिवासी नहीं माना जाता है; उदाहरण के लिए, मणिपुर के तिब्बती-बर्मन भाषी मैतेई एक समय आदिवासी थे, लेकिन कई शताब्दियों से बसे होने के कारण, जातीय हिंदू हैं। [131]

किसी दिए गए सामाजिक समूह के लिए यह निश्चित रूप से तय करना भी मुश्किल है कि वह "जाति" है या "जनजाति"। वर्गीकरण करने के लिए आंतरिक सामाजिक संगठन, अन्य समूहों के साथ संबंध, स्व-वर्गीकरण और अन्य समूहों द्वारा धारणा के संयोजन को ध्यान में रखा जाना चाहिए, जो कि सबसे अधिक सटीक और संदेह के लिए खुला है। [132] ये वर्गीकरण हजारों वर्षों से फैले हुए हैं, और यहां तक कि जाति-भेदभावपूर्ण कानूनी कोड के प्राचीन सूत्रधार (जो आमतौर पर केवल बसे हुए आबादी पर लागू होते हैं, आदिवासियों पर नहीं) स्पष्ट भेद के साथ आने में असमर्थ थे। [133]

जनजातीय वर्गीकरण की मांग

यह तय करने में अतिरिक्त कठिनाई कि कोई समूह आदिवासी होने के मानदंडों को पूरा करता है या नहीं, अनुसूचित जनजाति (एसटी) के रूप में सूचीबद्ध समूहों द्वारा प्राप्त नौकरी और शैक्षिक आरक्षण सहित संघीय और राज्य लाभों द्वारा बनाए गए आकांक्षात्मक आंदोलन हैं। [134] मणिपुर में, मैतेई टिप्पणीकारों ने अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत समूहों के खिलाफ नौकरियों के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले मैतेई लोगों के लिए एक प्रमुख आर्थिक नुकसान के रूप में अनुसूचित जनजाति की स्थिति की कमी की ओर इशारा किया है। [131] असम में, राजबोंगशी प्रतिनिधियों ने अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की भी मांग की है। [135] राजस्थान में, गुर्जर समुदाय ने एसटी दर्जे की मांग की है, यहां तक कि अपनी मांग को दबाने के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को भी अवरुद्ध कर दिया है।[136] हालांकि, राजस्थान सरकार ने यह कहते हुए गुज्जरों की मांग को अस्वीकार कर दिया कि गुज्जरों को ऊंची जाति का माना जाता है और वे किसी भी तरह से जनजाति नहीं हैं। [137] कई मामलों में, आदिवासी होने के ये दावे उन जनजातियों द्वारा विवादित हैं जो पहले से ही अनुसूची में सूचीबद्ध हैं और अधिक शक्तिशाली समूहों को अनुसूचित जनजातियों के रूप में मान्यता दिए जाने पर आर्थिक नुकसान का डर है; उदाहरण के लिए, राजबोंगशी मांग को बोडो जनजाति के प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है, [135] और मीना जनजाति ने अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त करने की गुज्जर आकांक्षाओं का कड़ा विरोध किया है। [138]

अंतर्विवाह, बहिर्विवाह और नृवंशविज्ञान

चुनौती का एक हिस्सा यह है कि जनजातियों की अंतर्विवाही प्रकृति का अनुपालन अधिकांश हिंदू जातियाँ भी करती हैं। दरअसल, कई इतिहासकारों और मानवविज्ञानियों का मानना है कि जातीय अंतर्विवाह उन विभिन्न समूहों की एक बार-आदिवासी उत्पत्ति को दर्शाता है जो अब स्थापित हिंदू जातियों का गठन करते हैं। [139] जाति हिंदू समाज की एक और परिभाषित विशेषता, जिसे अक्सर मुस्लिम और अन्य सामाजिक समूहों के साथ तुलना करने के लिए उपयोग किया जाता है, वंश/कबीला (या गोत्र) और गांव बहिर्विवाह है । [140] [141] हालाँकि, इन विवाह संबंधी वर्जनाओं को जनजातीय समूहों में भी सर्वव्यापी माना जाता है, और ये जाति और जनजाति के बीच विश्वसनीय विभेदक चिह्नक के रूप में काम नहीं करते हैं। [142] [143] [144]फिर, यह जनजातीय समाज से स्थापित हिंदू जातियों में एक प्राचीन आयात हो सकता है। [145] कश्मीर के मुस्लिम गुज्जर और पाकिस्तान के कलश जैसी जनजातियाँ इन बहिर्विवाही परंपराओं का पालन जातीय हिंदुओं और गैर-कश्मीरी आदिवासियों के साथ करती हैं, हालाँकि उनके आसपास की मुस्लिम आबादी ऐसा नहीं करती है। [140] [146]

आदिवासी जाति व्यवस्था का हिस्सा नहीं हैं, [147] हालांकि, कुछ मानवविज्ञानी उन जनजातियों के बीच अंतर करते हैं जो आदिवासी बने हुए हैं और उन जनजातियों के बीच जो आदिवासी (और इसलिए जाति) सीमाओं के टूटने के संदर्भ में जाति समाज में समाहित हो गए हैं , और नए मिश्रित जाति समूहों का प्रसार। दूसरे शब्दों में, जनजातियों में नृवंशविज्ञान (नई जातीय पहचान का निर्माण) एक विखंडन प्रक्रिया के माध्यम से होता है (जहां समूह नई जनजातियों के रूप में विभाजित हो जाते हैं, जो सजातीय विवाह को संरक्षित करता है), जबकि स्थिर जातियों के साथ यह आम तौर पर अंतर्विवाह के माध्यम से होता है (सख्त सजातीय विवाह के उल्लंघन में)). [148]

आदिवासियों को अक्सर समतावादी समाज बनाने वाला माना जाता है। हालाँकि, कई विद्वानों का तर्क है कि यह दावा कि आदिवासी जाति-आधारित समाज के विपरीत एक समतावादी समाज हैं, कुछ लोगों द्वारा आदिवासी और शहरी समाजों से किसी भी मतभेद को अधिकतम करने के लिए एक बड़े राजनीतिक एजेंडे का हिस्सा है। विद्वान कोएनराड एल्स्ट के अनुसार , भारतीय आदिवासियों के बीच जाति प्रथाएं और सामाजिक वर्जनाएं प्राचीन काल से चली आ रही हैं:

मुंडा आदिवासी न केवल आदिवासी अंतर्विवाह और सहभोजिता का अभ्यास करते हैं , बल्कि जनजाति के भीतर एक जातीय विभाजन भी देखते हैं, जो सामाजिक प्रदूषण, पौराणिक व्याख्या और कठोर दंड की धारणाओं से प्रेरित है।

अन्य मानदंड

जातियों के विपरीत, जो एक जटिल और परस्पर संबंधित स्थानीय आर्थिक विनिमय प्रणाली का हिस्सा बनती हैं, जनजातियाँ आत्मनिर्भर आर्थिक इकाइयाँ बनाती हैं। अधिकांश जनजातीय लोगों के लिए, भूमि-उपयोग अधिकार परंपरागत रूप से केवल जनजातीय सदस्यता से प्राप्त होते हैं। जनजातीय समाज समतावादी होता है, जिसका नेतृत्व वंशानुगत स्थिति के बजाय रिश्तेदारी और व्यक्तित्व के संबंधों पर आधारित होता है। जनजातियाँ आम तौर पर खंडीय वंशावली से बनी होती हैं जिनके विस्तारित परिवार सामाजिक संगठन और नियंत्रण के लिए आधार प्रदान करते हैं। जनजातीय धर्म जनजाति के बाहर किसी सत्ता को मान्यता नहीं देता।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

इनमें से कोई भी मानदंड विशिष्ट मामलों में लागू नहीं हो सकता है। भाषा हमेशा आदिवासी या जाति की स्थिति का सटीक संकेतक नहीं देती है। विशेष रूप से मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों में, कई आदिवासी समूहों ने अपनी मूल भाषाएँ खो दी हैं और वे केवल स्थानीय या क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते हैं। असम के कुछ हिस्सों में - ऐतिहासिक रूप से युद्धरत जनजातियों और गांवों के बीच विभाजित एक क्षेत्र - ग्रामीणों के बीच संपर्क में वृद्धि औपनिवेशिक काल के दौरान शुरू हुई, और 1947 में आजादी के बाद से इसमें तेजी आई है। एक पिजिन असमिया विकसित हुई, जबकि शिक्षित आदिवासी सदस्यों ने हिंदी सीखी और, बीसवीं सदी के अंत में सदी, अंग्रेजी.

आत्म-पहचान और समूह निष्ठा जनजातीय पहचान के अचूक मार्कर प्रदान नहीं करते हैं। स्तरीकृत जनजातियों के मामले में, कबीले, रिश्तेदार और परिवार की वफादारी जनजाति की वफादारी पर हावी हो सकती है। इसके अलावा, जनजातियों को हमेशा अलग-अलग रहने वाले लोगों के रूप में नहीं देखा जा सकता है; विभिन्न जनजातियों के अलगाव की डिग्री में काफी भिन्नता है। गोंड , संथाल और भील पारंपरिक रूप से उन क्षेत्रों पर हावी रहे हैं जिनमें वे रहते हैं । इसके अलावा, आदिवासी समाज हमेशा बाकी ग्रामीण आबादी की तुलना में अधिक समतावादी नहीं होता है; कुछ बड़ी जनजातियाँ, जैसे गोंड, अत्यधिक स्तरीकृत हैं।

बीसवीं शताब्दी के दौरान दक्षिण एशिया की जनजातीय आबादी के अनुमानों में स्पष्ट रूप से व्यापक उतार-चढ़ाव से यह पता चलता है कि जनजातीय और गैर-आदिवासी के बीच अंतर कितना अस्पष्ट हो सकता है। भारत की 1931 की जनगणना में 22 मिलियन जनजातीय लोगों की गणना की गई, 1941 में केवल 10 मिलियन की गणना की गई, लेकिन 1961 तक लगभग 30 मिलियन और 1991 में लगभग 68 मिलियन जनजातीय सदस्यों को शामिल किया गया। आंकड़ों के बीच अंतर बदलते जनगणना मानदंडों और व्यक्तियों को आदिवासी सदस्य के रूप में वर्गीकरण को बनाए रखने या अस्वीकार करने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन को दर्शाता है।

जनगणना के आँकड़ों में ये बदलाव जाति और जनजाति के बीच के जटिल संबंधों को रेखांकित करने का काम करते हैं। हालाँकि, सिद्धांत रूप में, ये शब्द जीवन के विभिन्न तरीकों और आदर्श प्रकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, वास्तव में, वे सामाजिक समूहों की निरंतरता के लिए खड़े हैं। जनजातियों और जातियों के बीच पर्याप्त संपर्क वाले क्षेत्रों में, सामाजिक और सांस्कृतिक दबाव अक्सर जनजातियों को वर्षों की अवधि में जाति बनने की दिशा में ले जाते हैं। बड़े पैमाने पर भारतीय समाज में सामाजिक उन्नति की महत्वाकांक्षा रखने वाले जनजातीय लोगों ने अपनी जनजातियों के लिए जाति का वर्गीकरण हासिल करने की कोशिश की है। इस अवसर पर, एक पूरी जनजाति या जनजाति का एक हिस्सा एक हिंदू संप्रदाय में शामिल हो गया और इस तरह सामूहिक रूप से जाति व्यवस्था में प्रवेश कर गया . यदि कोई विशिष्ट जनजाति उन प्रथाओं में संलग्न होती है जिन्हें हिंदू प्रदूषणकारी मानते हैं, तो जाति पदानुक्रम में समाहित होने पर जनजाति की स्थिति प्रभावित होगी।

निष्कर्ष

अनुसूचित जनजातियों के लिए संवैधानिक सुरक्षा उपाय

आदिवासियों के लिए कई संवैधानिक और न्यायिक सुरक्षा उपायों को कोडित किया गया है।

विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह

जिन अनुसूचित जनजाति समूहों की पहचान व्यापक समुदाय से अलग-थलग के रूप में की गई थी और जो एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हैं, उन्हें केंद्र सरकार द्वारा "विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह" (पीवीटीजी) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिन्हें पहले आदिम जनजातीय समूह के रूप में जाना जाता था। भारत के 18 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में अब तक 75 आदिवासी समुदायों की पहचान 'विशेष रूप से कमजोर आदिवासी समूहों' के रूप में की गई है। इन शिकार, भोजन-संग्रहण और कुछ कृषि समुदायों की पहचान जनजातीय जनसंख्या समूहों के बीच कम संस्कारित जनजातियों के रूप में की गई है और उनके सतत विकास के लिए विशेष कार्यक्रमों की आवश्यकता है। जनजातियाँ जागृत हो रही हैं और अपने लिए विशेष आरक्षण कोटा की माँग कर रही हैं। [149]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. एंगिन एफ इसिन (2015)। प्राच्यवाद के बाद नागरिकता: एक अधूरी परियोजना । टेलर और फ्रांसिस. पी। 213. आईएसबीएन 978-1-317-68137-3. 23 मार्च 2022 को मूल से संग्रहीत । 23 मार्च 2022 को

लिया गया । व्यापक रूप से आदिवासियों के रूप में संबोधित किए जाने वाले आदिवासी पूरे देश में फैले हुए विविध समूह हैं जिनकी अलग-अलग भाषाएं और समूह पहचान हैं।

2. ^ इसिन, एंगिन (2016)। प्राच्यवाद के बाद नागरिकता: राजनीतिक सिद्धांत को बदलना । नागरिकता परिवर्तन में पालग्रेव अध्ययन। पालग्रेव मैकमिलन यूके। पी। 202. आईएसबीएन 978-1-137-47950-1. 23 मार्च 2022 को मूल से संग्रहीत । 12 अप्रैल 2022 को पुनःप्राप्त .'आदिवासी' का शाब्दिक अर्थ है 'मूल निवासी', और यह पूरे उपमहाद्वीप में रहने वाले विविध आदिवासी समूहों को संदर्भित करता है।
3. ^ ए बी सी डी ई एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, आदिवासी 1 मार्च 2021 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत
4. ^ ए बी सी रूसेलो, राफेल (7 फरवरी 2013)। "भारत में स्वदेशीता का दावा" । किताबें और विचार . 21 जनवरी 2021 को मूल से संग्रहीत । 30 सितंबर 2022 को लिया गया ।
5. ^ ए बी सी डी ई एफ रॉबर्ट हैरिसन बार्न्स; एंड्रयू ग्रे; बेनेडिक्ट किंग्सबरी (1995), एशिया के स्वदेशी लोग , एशियाई अध्ययन संघ, आईएसबीएन 978-0-924304-14-9, 25 नवंबर 2008 को पुनःप्राप्त , आदिवासी की अवधारणा: 1930 के दशक में इस शब्द को गढ़ने वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं के अनुसार, 'आदिवासी' भारतीय उपमहाद्वीप के मूल निवासी हैं...
6. ^ ए बी सी डी ई "हम 'अनुसूचित जनजाति' हैं, 'आदिवासी' नहीं" . फ़ॉरवर्डप्रेस। 26 अक्टूबर 2018। 28 सितंबर 2022 को मूल से संग्रहीत । 28 सितंबर 2022 को लिया गया ।
7. ^ ए बी "बांग्लादेश - द वर्ल्ड फैक्टबुक" । Cia.gov . 30 जुलाई 2021 को मूल से संग्रहीत । 10 जुलाई 2021 को लिया गया ।
8. ^ "2011 की जनगणना प्राथमिक जनगणना सार" (पीडीएफ) । censusindia.gov.in । 5 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 11 जून 2015 को लिया गया .
9. ^ जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार, "एससी, एसटी की आबादी 25% है - इंडियन एक्सप्रेस" । Archive. Indianexpress.com । 16 जुलाई 2017 को मूल से संग्रहीत । 25 अप्रैल 2015 को लिया गया .
10. ^ "सीपीआई (एम) निजी क्षेत्र में एससी, एसटी के लिए आरक्षण की मांग करती है" । डीएनए इंडिया । 16 अप्रैल 2015. 14 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
11. ^ "बांग्लादेश | अल्पसंख्यकों और स्वदेशी लोगों की विश्व निर्देशिका" । अल्पसंख्यक अधिकार समूह । 19 जून 2015. 10 जुलाई 2021 को मूल से संग्रहीत । 10 जुलाई 2021 को लिया गया ।
12. ^ ए बी रीच एट अल। 2009 .
13. ^ ए बी बसु एट अल। 2016 .
14. ^ ए बी नरसिम्हन, पैटरसन और एट अल। 2019 .
15. ^ "वैज्ञानिकों ने मुंडाओं से जुड़ी आनुवंशिक पहेली को सुलझाया" । down-to-earth.org. 12 मार्च 2019. 25 सितंबर 2022 को मूल से संग्रहीत । 17 नवंबर 2022 को लिया गया ।
16. ^ ए बी "भारत में जनजातीय भाषाएँ - परिचय (1/4)" । Wordsinthebucket.com । 7 अप्रैल 2015. 24 सितंबर 2019 को मूल से संग्रहीत । 24 सितंबर 2019 को लिया गया ।
17. ^ ए बी संगीता दासगुप्ता (सितंबर 2018)। "आदिवासी अध्ययन: एक इतिहासकार के दृष्टिकोण से" । 29 सितंबर 2022 को लिया गया ।
18. ^ संगीता दासगुप्ता, "आदिवासी अध्ययन: एक इतिहासकार के दृष्टिकोण से।" इतिहास कम्पास 16.10 (2018): e12486 https://doi.org/10.1111/hic3.12486
19. ^ मोहनदास करमचंद गांधी (1968), महात्मा गांधी के चयनित कार्य: दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह , नवजीवन पब्लिशिंग हाउस , 25 नवंबर 2008 को पुनः प्राप्त , ... आदिवासी मूल निवासी हैं ...
20. ^ लोकसभा वाद-विवाद क्रमांक 10 जून 41-42 1995 वी.42 नंबर 41-42 , लोकसभा सचिवालय, भारत की संसद, 1995 , 25 नवंबर 2008 को पुनःप्राप्त , ... आदिवासी भारत के मूल निवासी हैं...
21. ^ मिनोचेहर रुस्तम मसानी; रामास्वामी श्रीनिवासन (1985)। स्वतंत्रता और असहमति: मीनू मसानी के अस्सीवें जन्मदिन पर उनके सम्मान में निबंध । डेमोक्रेटिक रिसर्च सर्विस । 25 नवम्बर 2008 को पुनःप्राप्त . आदिवासी भारत के मूल निवासी हैं। आदिवासी का यही अर्थ है: मूल निवासी। ये वे लोग थे जो द्रविड़ों से पहले वहां थे । आदिवासियों में गोंड, भील, मुरिया, नागा और सैकड़ों अन्य शामिल हैं।

22. ^ "भारत के स्वदेशी लोगों को श्रद्धांजलि" । राउंडटेबलइंडिया. 9 अगस्त 2018. मूल से 28 सितंबर 2022 को संग्रहीत । 28 सितंबर 2022 को लिया गया ।
23. ^ "आदिवासी महिला के उत्पीड़न पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला" । thehindu . 11 जनवरी 2011। 23 अप्रैल 2021 को मूल से संग्रहीत । 23 अप्रैल 2021 को लिया गया ।
24. ^ एस. फ़ैज़ी और प्रिया के. नायर, 2016। "आदिवासी: स्वदेशी लोगों की दुनिया की सबसे बड़ी आबादी," विकास, पालग्रेव मैकमिलन; अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए सोसायटी, वॉल्यूम। 59(3), पृष्ठ 350-353, दिसंबर।
25. ^ "आदिवासी, एन. और adj।" ओईडी ऑनलाइन। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, जून 2017. वेब। 10 सितंबर 2017.
26. ^ एल्स्ट, कोएनराड: (2001)
27. ^ लुईस वाइट (2006), एम्बॉडीड वर्किंग लाइव्स: वर्क एंड लाइफ इन महाराष्ट्र, इंडिया , लेक्सिंगटन बुक्स, आईएसबीएन 978-0-7391-0876-5, 25 नवंबर 2008 को पुनः प्राप्त , अनुसूचित जनजातियाँ स्वयं अपने जातीय समूह को आदिवासी के रूप में संदर्भित करती हैं, जिसका अर्थ है 'मूल निवासी।' हार्डिमन का तर्क है कि आदिवासी शब्द भारत में बेहतर है क्योंकि यह पूर्व-औपनिवेशिक काल में सापेक्ष स्वतंत्रता के साझा इतिहास को उजागर करता है...
28. ^ "यह 'आदिवासी' है, 'उपजाति' नहीं"" . द डेली स्टार । 9 नवंबर 2012। 14 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
29. ^ "उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र के थारस के बीच स्वदेशी ज्ञान" (पीडीएफ) । Genecampaign.org । 2000. 22 दिसंबर 2015 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
30. ^ गोविंद सदाशिव घुर्ये (1980), द शेड्यूल्ड ट्राइब्स ऑफ इंडिया , ट्रांजेक्शन पब्लिशर्स, आईएसबीएन 978-0-87855-692-2, 25 नवंबर 2008 को पुनः प्राप्त , मैंने आदिवासी समस्याओं के प्रति श्री जयपाल सिंह के सामान्य रवैये का पता लगाते हुए ऊपर कहा है, अनुसूचित जनजातियों के लिए 'आदिवासी' शब्द का इस्तेमाल करने पर उनका आग्रह... महोदय, मैं खुद को एक आदिवासी होने का दावा करता हूं और श्री जयपाल सिंह पाल के रूप में देश के एक मूल निवासी... 'आदिवासी' शब्द के लिए एक छद्म-जातीय-ऐतिहासिक पुष्टि।
31. ^ अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 [परिपत्र संदर्भ]
32. ^ [ए] [बी] "भारत की जनगणना 2011, प्राथमिक जनगणना सार, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति" । रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय, भारत सरकार। 28 अक्टूबर 2013. 23 सितंबर 2015 को मूल से संग्रहीत । 6 अक्टूबर 2018 को लिया गया । पीपीटी
33. ^ "झारखंड में आदिवासी आबादी में मामूली गिरावट | रांची समाचार - टाइम्स ऑफ इंडिया" । टाइम्स ऑफ इंडिया । जून 2013. 26 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
34. ^ "झारखंड की आबादी बढ़ी, एसटी की संख्या घटी" । dailypioneer.com. 11 जुलाई 2015 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
35. ^ यादव, अनुमेहा। "झारखंड के सिंहभूम में, धर्म जनगणना से आदिवासियों के बीच विभाजन गहरा गया है" । Scroll.in . 14 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
36. ^ बागची, सुवोजीत (26 सितंबर 2013)। 'छत्तीसगढ़ को चाहिए आदिवासी मुख्यमंत्री ' द हिंदू । 18 अक्टूबर 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
37. ^ "फ़ीचर" । pib.nic.in. 17 अप्रैल 2015 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
38. ^ "छत्तीसगढ़ के नक्सली और आदिवासी क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट | रायपुर समाचार - टाइम्स ऑफ इंडिया" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 3 जून 2014. 27 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
39. ^ "असम के आदिवासी आसान लक्ष्य क्यों हैं | इंडिया न्यूज़ - टाइम्स ऑफ़ इंडिया" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 4 जनवरी 2015. 26 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
40. ^ "आदिवासी बनाम वनवासी: भारत में आदिवासियों का हिंदूकरण" । Outlookindia.com । 3 फरवरी 2022. 14 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

41. ^ "झारखंड में, जनजातियों को धर्मांतरण की राजनीति का दंश झेलना पड़ता है" । हिंदुस्तान टाइम्स । 1 दिसंबर 2014. 14 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
42. ^ "भारत, काफी हद तक अप्रवासियों का देश - द हिंदू" । द हिंदू । 12 जनवरी 2011. 19 फरवरी 2014 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
43. ^ "जर्नल ऑफ़ क्रिटिकल रिव्यूज़ झारखंड की नागपुरी भाषा की विशेष विशेषताओं का एक अध्ययन" । अनुसंधान गेट। जुलाई 2020 . 23 सितंबर 2022 को लिया गया ।
44. ^ [ए बी] अलॉयसियस इरुदायम; जयश्री पी. मंगुभाई; भारत ग्राम पुनर्निर्माण; विकास परियोजना (2004), आदिवासी स्पीक आउट: तमिलनाडु में आदिवासियों के खिलाफ अत्याचार , परिवर्तन के लिए पुस्तकें, आईएसबीएन 978-81-87380-78-8, पुनः प्राप्त 26 नवंबर 2008 , ... असभ्य ... ये वन और भूमि क्षेत्र एक क्षेत्रीय पहचान मानते हैं क्योंकि वे आदिवासियों के सामूहिक व्यक्तित्व का विस्तार हैं ...
45. ^ सीआर बिजॉय, आदिवासियों/स्वदेशी लोगों के अखिल भारतीय समन्वय मंच की कोर समिति (फरवरी 2003), "भारत के आदिवासी - भेदभाव, संघर्ष और प्रतिरोध का इतिहास" , पीयूसीएल बुलेटिन , 16 जून 2008 को मूल से संग्रहीत , पुनः प्राप्त 25 नवंबर 2008 , ... एक सामान्य नियम के रूप में, आदिवासियों को जाति के हिंदुओं द्वारा उसी तरह से अशुद्ध नहीं माना जाता है, जिस तरह से दलितों को माना जाता है। लेकिन वे पूर्वाग्रह का सामना करना जारी रखते हैं (कम इंसानों के रूप में), वे सामाजिक रूप से दूर हैं और अक्सर समाज से हिंसा का सामना करते हैं ...
46. ^ ठाकोरलाल भारभाई नाइक (1956), द भील्स: ए स्टडी , भारतीय आदिमजाति सेवक संघ , 25 नवंबर 2008 को पुनः प्राप्त , ...वाल्मीकि, जिनकी कलम से इस महान महाकाव्य का जन्म हुआ, पारंपरिक के अनुसार, स्वयं वालिया नामक भील थे उनके जीवन का लेखा-जोखा...
47. ^ एडवर्ड बालफोर (1885), द साइक्लोपीडिया ऑफ इंडिया एंड ऑफ ईस्टर्न एंड सदर्न एशिया , बर्नार्ड क्वारिच , 26 नवंबर 2008 को पुनःप्राप्त , ... मेवाड़ में, ग्रासिया मिश्रित भील और राजपूत वंश के हैं, जो उदयपुर के राणा को श्रद्धांजलि देते हैं। ..
48. ^ आरके सिन्हा (1995), मालवा का भिलाला , भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, आईएसबीएन 978-81-85579-08-5, 26 नवंबर 2008 को पुनः प्राप्त , ... भिलाला को आमतौर पर एक मिश्रित समूह माना जाता है जो अप्रवासी पुरुष राजपूतों और मध्य भारत की भील महिलाओं के विवाह गठबंधन से उत्पन्न हुआ है ...
49. ^ [ए बी] आर. सिंह (2000), जनजातीय विश्वास, प्रथाएं और विद्रोह , अनमोल प्रकाशन प्राइवेट। लिमिटेड, आईएसबीएन 978-81-261-0504-5, retrieved 26 November 2008, ... The Munda Parha was known as 'Manki', while his Oraon counterpart was called 'Parha Raja.' The lands these adivasis occupied were regarded to be the village's patrimony ... The Gond rajas of Chanda and Garha Mandla were not only the hereditary leaders of their Gond subjects, but also held sway over substantial communities of non-tribals who recognized them as their feudal lords ...
50. ^ Milind Gunaji (2005), Offbeat Tracks in Maharashtra: A Travel Guide, Popular Prakashan, ISBN 978-81-7154-669-5, retrieved 26 November 2008, ... The Navegaon is one of the forests in Maharashtra where the natives of this land still live and earn their livelihood by carrying out age old activities like hunting, gathering forest produce and ancient methods of farming. Beyond the Kamkazari lake is the Dhaavalghat, which is home to Adivasis. They also have a temple here, the shrine of Lord Waghdev ...
51. ^ Surajit Sinha, Centre for Studies in Social Sciences (1987), Tribal polities and state systems in pre-colonial eastern and north eastern India, K.P. Bagchi & Co., ISBN 978-81-7074-014-8, retrieved 26 November 2008, ... The way in which and the extent to which tribal support had been crucial in establishing a royal dynasty have been made quite clear ... tribal loyalty, help and support were essential in establishing a ruling family ...
52. ^ Chisholm, Hugh, ed. (1911). "Central Provinces and Berar" . Encyclopædia Britannica. Vol. 5 (11th ed.). Cambridge University Press. pp. 681–683, see page 683, first para, lines 4 to 6. The 16th century saw the establishment of a powerful Gond kingdom by Sangram Sah, who succeeded in 1480 as the 47th of the petty Gond rajas of Garha-Mandla, and extended his

dominions so as to include Saugor and Damoh on the Vindhyan plateau, Jubbulpore and Narsinghpur in the Nerbudda valley, and Seoni on the Satpura highlands.

53. ^ Chisholm, Hugh, ed. (1911). "Chanda" . Encyclopædia Britannica. Vol. 5 (11th ed.). Cambridge University Press. p. 837.
54. ^ "PUCL Bulletin, February 2003". Archived from the original on 16 June 2008. Retrieved 27 November 2008.
55. ^ P. 27 Madhya Pradesh: Shajapur By Madhya Pradesh (India)
56. ^ Mhaiske, Vinod M.; Patil, Vinayak K.; Narkhede, S. S. (1 January 2016). Forest Tribology And Anthropology. Scientific Publishers. ISBN 978-93-86102-08-9.
57. ^ P. 219 Calcutta Review By University of Calcutta, 1964
58. ^ [a] [b] Piya Chatterjee (2001), A Time for Tea: Women, Labor, and Post/colonial Politics on an Indian Plantation, Duke University Press, ISBN 978-0-8223-2674-8, retrieved 26 November 2008, ... Among the Munda, customary forms of land tenure known as khuntkatti stipulated that land belonged communally to the village, and customary rights of cultivation, branched from corporate ownership. Because of Mughal incursions, non-Jharkhandis began to dominate the agrarian landscape, and the finely wrought system of customary sharing of labor, produce and occupancy began to crumble. The process of dispossession and land alienation, in motion since the mid-eighteenth century, was given impetus by British policies that established both zamindari and ryotwari systems of land revenue administration. Colonial efforts toward efficient revenue collection hinged on determining legally who had proprietal rights to the land ...
59. ^ [a] [b] Ulrich van der Heyden; Holger Stoecker (2005), Mission und macht im Wandel politischer Orientierungen: Europäische Missionsgesellschaften in politischen Spannungsfeldern in Afrika und Asien zwischen 1800 und 1945, Franz Steiner Verlag, ISBN 978-3-515-08423-9, retrieved 26 November 2008, ... The permanent settlement Act had an adverse effect upon the fate of the Adivasis for, 'the land which the aboriginals had rested from the jungle and cultivated as free men from generation was, by a stroke of pen, declared to be the property of the Raja (king) and the Jagirdars.' The alien became the Zamindars (Landlords) while the sons of the soil got reduced to mere tenants. Now, it was the turn of the Jagirdars-turned-Zamindars who further started leasing out land to the newcomers, who again started encroaching Adivasi land. The land grabbing thus went on unabated. By the year 1832 about 6,411 Adivasi villages were alienated in this process ...
60. ^ O.P. Ralhan (2002), Encyclopaedia of Political Parties, Anmol Publications Pvt. Ltd., ISBN 978-81-7488-865-5, retrieved 26 November 2008, ... The Permanent Settlement was 'nothing short of the confiscation of raiyat lands in favor of the zamindars.' ... Marx says '... in Bengal as in Madras and Bombay, under the zamindari as under the ryotwari, the raiyats who form 11/12ths of the whole Indian population have been wretchedly pauperised.' To this may be added the inroads made by the Company's Government upon the village community of the tribals (the Santhals, Kols, Khasias etc.) ... There was a wholesale destruction of 'the national tradition.' Marx observes: 'England has broken down the entire framework of Indian society ... [permanent dead link]
61. ^ Govind Kelkar; Dev Nathan (1991), Gender and Tribe: Women, Land and Forests in Jharkhand, Kali for Women, ISBN 978-1-85649-035-1, retrieved 26 November 2008, ... of the features of the adivasi land systems. These laws also showed that British colonial rule had passed on to a new stage of exploitation ... Forests were the property of the zamindar or the state ...
62. ^ [a] [b] William Wilson Hunter; Hermann Michael Kisch; Andrew Wallace Mackie; Charles James O'Donnell; Herbert Hope Risley (1877), A Statistical Account of Bengal, Trübner, retrieved 26 November 2008, ... The Kol insurrection of 1831, though, no doubt, only the bursting forth of a fire that had long been smouldering, was fanned into flame by the following episode:- The brother of the Maharaja, who was the holder of one of the maintenance grants which comprised Sonpur, a pargana in the southern portion of the estate, gave farms of some of the villages over the heads of the Mankis and Mundas, to certain Muhammadans, Sikhs and others, who has obtained his favour ... not only was the Manki dispossessed, but two of his sisters were seduced

or ravished by these hated foreigners ... one of them ..., it was said, had abducted and dishonoured the Munda's wife ...

63. ^ Radhakanta Barik (2006), Land and Caste Politics in Bihar, Shipra Publications, ISBN 978-81-7541-305-4, retrieved 26 November 2008, ... As usually the zamindars were the moneylenders, they could pressurize the tenants to concede to high rent ...
64. ^ Shashank Shekhar Sinha (2005), Restless Mothers and Turbulent Daughters: Situating Tribes in Gender Studies, Stree, ISBN 978-81-85604-73-2, retrieved 26 November 2008, ... In addition, many tribals were forced to pay private taxes ...
65. ^ [a] [b] Economic and Political Weekly, No.6-8, vol. V.9, Sameeksha Trust, 1974, retrieved 26 November 2008, ... The Adivasis spend their life-times working for the landlord-moneylenders and, in some cases, even their children are forced to work for considerable parts of their lives to pay off debts ...
66. ^ Sita Venkateswar (2004), Development and Ethnocide: Colonial Practices in the Andaman Islands, IWGIA, ISBN 978-87-91563-04-1, ... As I have suggested previously, it is probable that some disease was introduced among the coastal groups by Lieutenant Colebrooke and Blair's first settlement in 1789, resulting in a marked reduction of their population. The four years that the British occupied their initial site on the south-east of South Andaman were sufficient to have decimated the coastal populations of the groups referred to as Jarawa by the Aka-bea-da ...
67. ^ Luigi Luca Cavalli-Sforza; Francesco Cavalli-Sforza (1995), The Great Human Diasporas: The History of Diversity and Evolution, Basic Books, ISBN 978-0-201-44231-1, ... Contact with whites, and the British in particular, has virtually destroyed them. Illness, alcohol, and the will of the colonials all played their part; the British governor of the time mentions in his diary that he received instructions to destroy them with alcohol and opium. He succeeded completely with one group. The others reacted violently ...
68. ^ Paramjit S. Judge (1992), Insurrection to Agitation: The Naxalite Movement in Punjab, Popular Prakashan, ISBN 978-81-7154-527-8, retrieved 26 November 2008, ... The Santhal insurrection in 1855–56 was a consequence of the establishment of the permanent Zamindari Settlement introduced by the British in 1793 as a result of which the Santhals had been dispossesed of the land that they had been cultivating for centuries. Zamindars, moneylenders, traders and government officials exploited them ruthlessly. The consequence was a violent revolt by the Santhals which could only be suppressed by the army ...
69. ^ The Indian Journal of Social Work, vol. v.59, Department of Publications, Tata Institute of Social Sciences, 1956, retrieved 26 November 2008, ... Revolts rose with unfailing regularity and were suppressed with treachery, brute force, tact, cooption and some reforms ...
70. ^ Roy Moxham (2003), Tea, Carroll & Graf Publishers, ISBN 978-0-7867-1227-4, retrieved 26 November 2008, ... many of the labourers came from Chota Nagpur District ... home to the Adivasis, the most popular workers with the planters – the '1st class jungley.' As one of the planters, David Crole, observed: 'planters, in a rough and ready way, judge the worth of a coolie by the darkness of the skin.' In the last two decades of the nineteenth century 350,000 coolies went from Chota Nagpur to Assam ...
71. ^ HEUZE, Gérard: Où Va l'Inde Moderne? L'Harmattan, Paris 1993. A. Tirkey: "Evangelization among the Uraons", Indian Missiological Review, June 1997, esp. p. 30-32. Elst 2001
72. ^ आदिवासी बस्तर का बृहद् इतिहास: Bastara ke Cālukya aura Girijana. BR Publishing. 2007. p. 173.
73. ^ पृष्ठ 63 टैगोर विदाउट इल्यूजन्स, हितेंद्र मित्रा द्वारा 6 अगस्त 2022 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत
74. ^ समीक्षा ट्रस्ट, पी. 1229 इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली
75. ^ पी. 4 "खुरदा में स्वतंत्रता आंदोलन" 29 नवंबर 2007 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत डॉ. अतुल चंद्र प्रधान
76. ^ पी. 111 हैदराबाद में स्वतंत्रता संग्राम: हैदराबाद द्वारा एक कनेक्टेड अकाउंट (भारत: राज्य)
77. ^ सिंहभूम का आदिवासी संघर्ष
78. ^ पी. 32 राजस्थान के आदिवासियों के बीच सामाजिक और राजनीतिक जागृति, गोपी नाथ शर्मा द्वारा

79. ^ पी. 420 आंध्र प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम के कौन हैं, सरोजिनी रेगानी द्वारा
80. ^ "मुंडा विद्रोह - बांग्लापीडिया" । 6 अगस्त 2022 को मूल से संग्रहीत । 6 अगस्त 2022 को लिया गया ।
81. ^ टॉड स्कुडीयर (1997), भारतीय हिंदुओं और अमेरिकी ईसाइयों के बीच मृत्यु और शोक के पहलू: एक सर्वेक्षण और क्रॉस-सांस्कृतिक तुलना , विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय - मैडिसन , 25 नवंबर 2008 को पुनः प्राप्त , ... वैदिक आर्य प्रवेश के लिए विशेष रूप से उत्सुक नहीं थे स्वर्ग, वह बहुत अधिक इस-सांसारिक उन्मुख था। पुनर्जन्म की धारणा बाद में पेश नहीं की गई थी। हालाँकि, एक सार्वभौमिक शक्ति की अवधारणा थी - एक अंतर्निहित अद्वैत वास्तविकता का एक विचार जिसे बाद में ब्राह्मण कहा गया ...
82. ^ "धर्म और सामाजिक विज्ञान विश्वकोश के सामग्री पृष्ठ" । हिर.हार्टसेम.edu । 11 अक्टूबर 2013 को मूल से संग्रहीत । 30 अक्टूबर 2014 को लिया गया ।
83. ^ "बीबीसी समाचार | विश्व | यूरोप | स्वदेशी लोग 'दुनिया भर में सबसे खराब स्थिति में' हैं" . news.bbc.co.uk। 28 मई 2009 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया ।
84. ^ चकमा, एस.; जेन्सेन, एम.; स्वदेशी मामलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय कार्य समूह (2001)। स्वदेशी लोगों के खिलाफ नस्लवाद . IWGIA. पी। 196. आईएसबीएन 9788790730468. 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
85. ^ हिक्स, डेविड (2010)। अनुष्ठान और विश्वास: धर्म के मानवविज्ञान में अध्ययन (3 संस्करण)। रोवमैन अल्तामिरा । पी। 359. टायलर की जीववाद की धारणा - उनके लिए पहला धर्म - में यह धारणा शामिल थी कि प्रारंभिक होमो सेपियन्स ने जानवरों और पौधों में आत्माओं का निवेश किया था ...
86. ^ "जीववाद" । हेलेन जेम्स द्वारा योगदान; इयान फेवेल की सहायता से डॉ. इलियट शॉ द्वारा समन्वित। ELMAR परियोजना (कुम्ब्रिया विश्वविद्यालय)। 1998-99. 10 जनवरी 2015 को मूल से संग्रहीत । 30 अक्टूबर 2014 को लिया गया ।
87. ^ "मूल अमेरिकी धार्मिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता: एक परिचयात्मक निबंध" । बहुलवाद परियोजना । हार्वर्ड कॉलेज के अध्यक्ष और अध्येता और डायना एक। 2005. 23 दिसंबर 2014 को मूल से संग्रहीत । 30 अक्टूबर 2014 को लिया गया ।
88. ^ रिकम, 2005. पृ. 117
89. ^ मिबांग, चौधरी, 2004. पृ. 47
90. ^ डालमिया, सदाना, 2012. पीपी. 44-45
91. ^ मिनाहन, 2012. पी. 236
92. ^ सच्चिदानंद, 1980. पृ. 235
93. ^ श्रीवास्तव, 2007।
94. ^ "सरना को स्वतंत्र धर्म का दर्जा देने के लिए एसटी पैनल" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 4 अगस्त 2013 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
95. ^ धर्म और प्रकृति का विश्वकोश: के-जेड खंड। 2. थॉम्स कॉन्टिनम। 2005. पी. 82. आईएसबीएन 9781843711384. 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
96. ^ मान, आरएस (2005)। अंडमान और निकोबार जनजातियों का पुनः अध्ययन: मुठभेड़ और चिंताएँ । मित्तल प्रकाशन। पी। 204. आईएसबीएन 9788183240109. 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
97. ^ एसजी सरदेसाई (1986), प्राचीन भारत में प्रगति और रूढ़िवाद , पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, आईएसबीएन 9788170070214, पुनः प्राप्त 25 नवंबर 2008 , ... ऋग्वैदिक धर्म का केंद्र यज्ञ था। ... ऋग्वेद में कोई आत्मा, कोई ब्रह्म, कोई मोक्ष, कोई मूर्ति पूजा नहीं है...
98. ^ [ए] [बी] शिव कुमार तिवारी (2002), ट्राइबल रूट्स ऑफ हिंदूइज्म , सरूप एंड संस, आईएसबीएन 978-81-7625-299-7, 12 दिसम्बर 2008 को पुनःप्राप्त
99. ^ कुमार सुरेश सिंह (1985), भारत में जनजातीय समाज: एक मानव-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य , मनोहर, आईएसबीएन 9788185054056, पुनः प्राप्त 12 दिसंबर 2008 , ... शिव शुरू से ही एक 'आदिवासी देवता' थे और वन में रहने वाले समुदाय भी शामिल थे, जिनमें वे लोग भी शामिल थे जो अब आदिवासी नहीं रह गए हैं और जो आज आदिवासी हैं ...

100. ^ "भगवान शिव को समर्पित - इंटरनेट पर हिंदू भगवान शिव का निवास स्थान" । शैवम्.ओआरजी. 3 दिसंबर 2007 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
101. ^ "हिंदू धर्म के बारे में सब कुछ" । 2 जनवरी 2008 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
102. ^ पी. 269 ब्राह्मणवाद और हिंदूवाद, या, भारत में धार्मिक विचार और जीवन: वेद और हिंदुओं की अन्य पवित्र पुस्तकों पर आधारित (गूगल ईबुक) सर मोनियर मोनियर-विलियम्स द्वारा
103. ^ "श्रीवैष्णववाद" । 4 मई 2008 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
104. ^ "बिरसा का जन्म वर्ष 1874 में हुआ था, मुंडा प्रथा के अनुसार गुरुवार उनके जन्म का दिन था" । 28 सितम्बर 2007 को मूल से संग्रहीत । 13 नवंबर 2007 को पुनःप्राप्त .
105. ^ "thetribaltribune.com" । पुरालेख.है. 2 मई 2008 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
106. ^ "तमिलनाडु/श्रीवकुंतम के मंदिर और किंवदंतियाँ - (पेज 3)" । 4 मार्च 2016 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
107. ^ थॉमस पार्कहिल: द फ़ॉरेस्ट सेटिंग इन हिंदू एपिक्स।
108. ^ एमएस गोलवलकर: बंच ऑफ थॉट्स, पृष्ठ 479।
109. ^ जैन, गिरिलाल: द हिंदू फेनोमेनन। यूबीएसपीडी, दिल्ली 1994।
110. ^ एस्चमैन, कुल्के और त्रिपाठी, सं.: कल्ट ऑफ जगन्नाथ, पृष्ठ 97। एल्स्ट 2001
111. ^ महाभारत (I.31-54) (II.37.47; II.44.21) एल्स्ट 2001
112. ^ कौटिल्य: अर्थशास्त्र 9:2:13-20, पेंगुइन संस्करण, पृ. 685. एल्स्ट 2001
113. ^ लवीना डी मेलो (2018)। सामुदायिक विकास: ग्रामीण, शहरी और एक जनजातीय परिप्रेक्ष्य । एफएसपी मीडिया। पी। 39.
114. ^ भुक्या, भांग्या (जनवरी 2013)। चटर्जी, जोया ; पीबॉडी, नॉर्बर्ट (संस्करण)। "संप्रभुओं की अधीनता: उपनिवेशवाद और मध्य भारत में गोंड राजा, 1818-1948"। आधुनिक एशियाई अध्ययन । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस । 47 (1):
309. डीओआई : 10.1017/एस0026749एक्स12000728 । जेएसटीओआर 23359786 । एस2सीआईडी 145095937 ।
115. ^ मिश्रा, पतित पबन (1997)। "भारतीयकरण सिद्धांत की आलोचना"। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही । भारतीय इतिहास कांग्रेस . 58 : 805. जेएसटीओआर 44144025 ।
116. ^ [1] [स्थायी मृत लिंक]
117. ^ ए बी "भारत में आदिवासी बच्चों की शिक्षा - पोर्टल" । 4 अप्रैल 2017 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
118. ^ सुजाता, के (2000)। "भारतीय अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा: आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम जिले में सामुदायिक स्कूलों का एक अध्ययन" । unesdoc.unesco.org . 14 जुलाई 2019 को मूल से संग्रहीत । 14 जुलाई 2019 को लिया गया ।
119. ^ "आदिवासियों में स्कूल छोड़ने की दर ऊंची बनी हुई है- द न्यू इंडियन एक्सप्रेस" । new Indianexpress.com. 7 मार्च 2016 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .
120. ^ आचार्य, दीपक और श्रीवास्तव अंशू (2008): स्वदेशी हर्बल दवाएं: जनजातीय फॉर्मूलेशन और पारंपरिक हर्बल प्रथाएं, आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर, जयपुर-भारत। आईएसबीएन 978-81-7910-252-7 . पीपी 440
121. ^ सलवा जुडूम [परिपत्र संदर्भ]
122. ^ राशिद, उमर (29 अगस्त 2015)। "शहरी भारत में ग्रामीण वास्तविकताओं को मंच पर लाना" । द हिंदू । मूल से 28 सितंबर 2021 को संग्रहीत । 29 अगस्त 2015 को लिया गया .
123. ^ "एशियन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स" । achrweb.org. मूल से 21 जुलाई 2008 को संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .

124. ^ "प्रधानमंत्री की माओवादियों को फटकार: बंदूकें आदिवासियों का विकास सुनिश्चित नहीं करतीं" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 4 नवंबर 2009. 11 अगस्त 2011 को मूल से संग्रहीत ।

125. ^ "भारतीय प्रधानमंत्री जनजातियों तक पहुंचे" । बीबीसी समाचार । 4 नवंबर 2009. 8 नवंबर 2009 को मूल से संग्रहीत । 23 अप्रैल 2010 को पुनःप्राप्त .

126. ^ श्रीनिवासन, रुक्मिणी (16 जनवरी 2010)। "आदिवासी खराब प्रगति करते हैं, सबसे निचले पायदान पर रहते हैं" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 11 अगस्त 2011 को मूल से संग्रहीत ।

127. ^ "द ट्रिब्यून, चंडीगढ़, भारत - मुख्य समाचार" । tribuneindia.com. 5 जून 2011 को मूल से संग्रहीत । 8 जनवरी 2017 को लिया गया .

128. ^ धार, आरती (4 नवंबर 2009)। "बंदूक के साये में सतत आर्थिक गतिविधि संभव नहीं: पीएम" । द हिंदू । चेन्नई, भारत।

129. ^ जेम्स मिनाहन और लियोनार्ड डब्ल्यू. डोब (1996), नेशंस विदाउट स्टेट्स: ए हिस्टोरिकल डिक्शनरी ऑफ कंटेम्परेरी नेशनल मूवमेंट्स , ग्रीनवुड प्रेस, आईएसबीएन 978-0-313-28354-3, 25 नवंबर 2008 को पुनःप्राप्त , ... आदिवासी जनजातियाँ प्राचीन भारत के पूर्व-द्रविड़ियन क्षेत्रों को शामिल करती हैं...

130. ^ सरीना सिंह; जो बिंडलॉस; पॉल क्लैमर; जेनाइन एबरले (2005), भारत , लोनली प्लैनेट, आईएसबीएन 978-1-74059-694-7, 25 नवंबर 2008 को पुनः प्राप्त , ... हालाँकि पूर्वोत्तर राज्य भारत के भौगोलिक क्षेत्र का केवल 7.5% हिस्सा बनाते हैं, यह क्षेत्र भारत के 20% आदिवासी लोगों का घर है। निम्नलिखित मुख्य जनजातियाँ हैं... नागा... मोनपा... अपातानी और आदि... खासी...

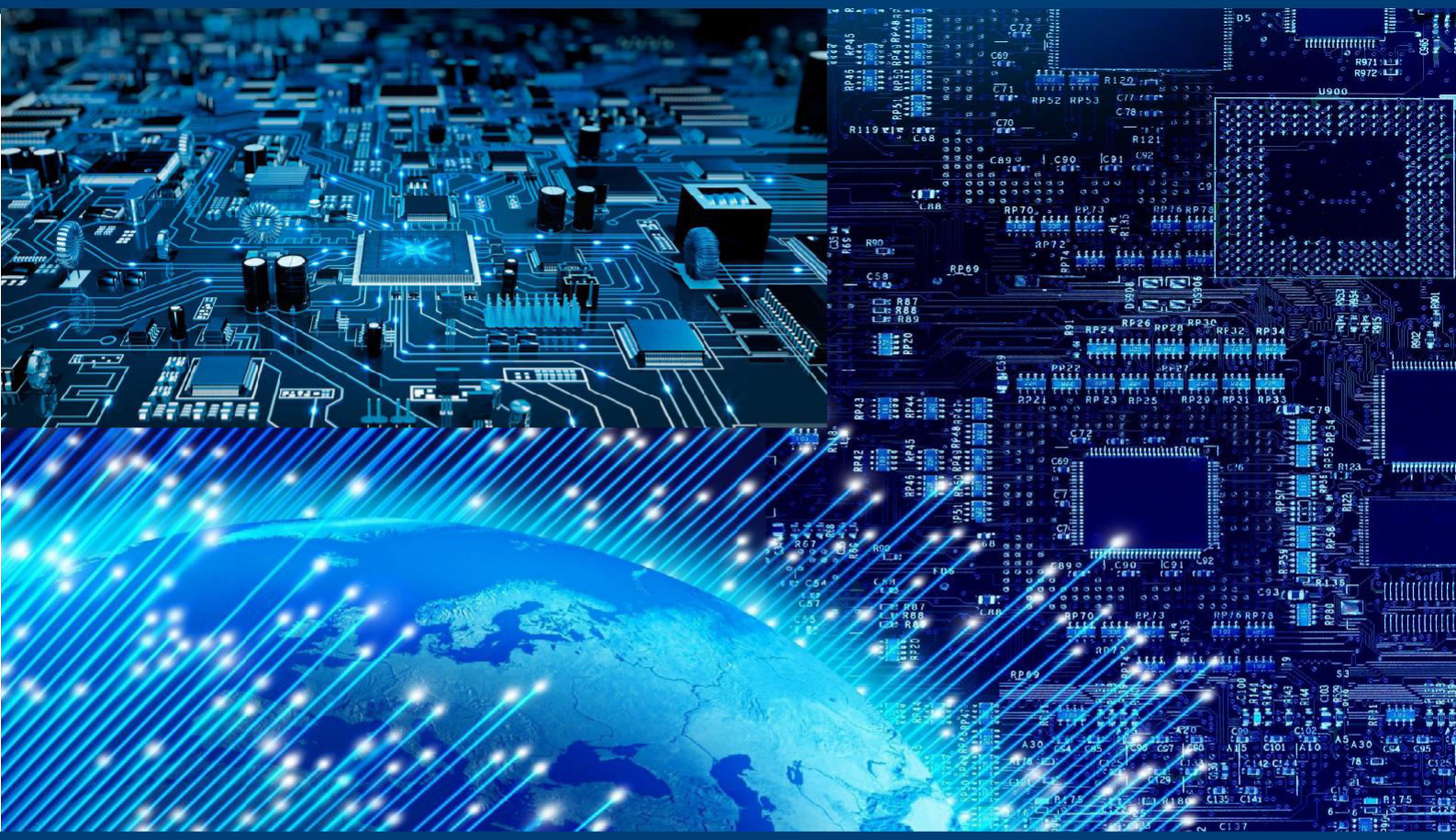

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |